जनवरी 2014

दादावाणी

मूल्य : ₹ १०

'ज्ञानीपुरुष' का चारित्र तो बहुत ही उच्च होता है। कभी मन भी नहीं बिगड़ता। शील को चारित्र कहते हैं। शील यानी विषय का विचार तक नहीं आए। हमें विषय का एक भी विचार नहीं आता। हमारा जो चारित्र है, वही चारित्र कहलाता है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : ९, अंक : ३
अखंड क्रमांक : ९९
जनवरी २०१४

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.

Total 28 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

शीलवान

संपादकीय

मनुष्य देह की प्राप्ति के बाद, जिस देह से परमात्मा पद प्राप्त कर सके ऐसा है, फिर भी वह पद तो क्या लेकिन आदर्श मनुष्य जीवन भी नहीं जी सकते। इसका कारण क्या है? वह है, अज्ञान और उसकी वजह से उद्‌भवित कषाय और विषय, जो जन्मोंजन्म के बंधन का कारण हैं। और उनसे उभर ने का उपाय क्या है? वह है, ज्ञानीपुरुष की अनन्य शरण।

ज्ञानीपुरुष कि जिन्होंने स्वपुरुषार्थ द्वारा परमात्म दशा जैसा शील-चारित्र प्राप्त किया है, उनकी कृपा से क्या प्राप्त नहीं हो सकता? ज्ञानियों की यही करुणा दृष्टि होती है कि कैसे जीव कषाय-विषय और संसार की मोह जाल से मुक्त होकर स्व-स्वरूप के सुख और आनंद को प्राप्त करे, और दुर्लभ मानी जानेवाली उसी चीज़ की प्राप्ति वह ज्ञानीपुरुष की कृपा और वचनबल से सहज सिद्ध कर सकें, ऐसा होता है। फिर वही व्यक्ति, शीलवान और चारित्रवान बनकर, परमात्म दशा तक पहुँचने में समर्थ हो जाए, तो उसमें अचरज की क्या बात है? मनुष्य का ध्येय यही होना चाहिए कि खुद शील और चारित्र सिद्ध करके खुद का जीवन सार्थक कर लें।

शीलवान यानी सिर्फ विषय को जीत लेना, उतना ही नहीं, बल्कि क्रोध-मान-माया-लोभ भी उसे वश हो चुके होते हैं। उनमें सिन्सियरिटी, मॉरेलिटी, सरलता, नम्रता, सहजता जैसे सर्व गुण होते हैं। शीलवान यानी निर्भय भगवान भी उसे प्रश्न नहीं उठा सकें, वह कैसी अद्‌भुत स्थिति कहलाएगी! फिर प्रताप नामक का गुण उत्पन्न होता है। शील का प्रताप तो गज़ब का होता है। सिंह हिंसक भाव भूल जाए, और साँप शीलवान को देखकर काँप उठे। शीलवान तो व्यवहार चारित्र का उच्चत्तम पद है।

स्वरूप का यह ज्ञान प्राप्त हुआ है, इसलिए शीलवान और चारित्रवान बना जा सकता है। ब्रह्मचर्य यह कि किसी भी जीव को किंचित्‌मात्र दुःख नहीं देना है, इन दोनों का गुणा हो, तब चारित्रबल उत्पन्न होता है।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं, इस काल में तो पूर्ण शीलवान पुरुष नहीं मिल सकते। फिर भी खुद की अनुभव दशा के आधार से उन्हों ने बहुत ही सरल और सादे व्यवहार के उदाहरण देकर शील और चारित्र की सचोट समझ देते हैं। इस काल में जिन्हें अद्‌भुत आत्मदशा और शीलवान, चारित्रवान रूप बर्तता हैं, फिर भी उन ज्ञानी की लघुत्तम दृष्टि तो हृदय को स्पर्श जाए ऐसी है।

जिन मोक्षार्थियों को इसी देह से आत्मा का स्पष्टवेदन अनुभव करना हो, उनके लिए विशुद्ध ब्रह्मचर्य के साथ-साथ संपूर्ण कषाय रहित जीवन के बगैर इसकी प्राप्ति संभव है ही नहीं। जिन्हें एकावतारी पद प्राप्त करके मोक्ष में ही जाना है, उन्हें तो ज्ञानीपुरुष द्वारा बताए मार्ग पर चलकर खुद का कल्याण कर लेना है। खुद कल्याण स्वरूप होने के बाद बिना बोले अन्य का कल्याण हो जाएगा। चारित्र की मूर्ति को देखते ही सभी भावों का शमन हो जाता है! इसलिए प्योर बनना है, शीलवान बनना है!

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

शीलवान

ज़रूरत है, शीलरूपी चारित्र की

कोई तुझे झिड़की लगाए, तो तू उग्र हो जाता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हो जाता हूँ।

दादाश्री : वह कमज़ोरी कहलाएगी या मज़बूती कहलाएगी?

प्रश्नकर्ता : दोनों।

दादाश्री : नहीं, नहीं, वह तो कमज़ोरी ही कहलाएगी।

प्रश्नकर्ता : कहीं पर तो क्रोध होना ही चाहिए न!

दादाश्री : नहीं, नहीं। क्रोध तो खुद ही एक कमज़ोरी है। कहीं पर तो क्रोध होना ही चाहिए, वह तो संसारी बात है। यह तो खुद से क्रोध निकल नहीं पाता इसलिए ऐसा कहता है कि क्रोध होना ही चाहिए!

जिसके पास क्रोध है, वह क्रोध के ताप से सामनेवाले को वश में करने जाता है और जिसके पास क्रोध नहीं है, वह शील नामक चरित्र से सबको वश में कर सकता है। जानवर भी उसके वश हो जाएँ!

हिम समान है, शील का ताप

क्या तुझे पता है, जो हिमपात होता है वह? अब हिम का मतलब बहुत ही ठंड होती है न? उस हिम से पेड़ जल जाते हैं, सारा कपास, घास सभी कुछ जल जाता है। तू यह जानता है क्या? वे ठंड में जल क्यों जाते होंगे?

प्रश्नकर्ता : 'ओवर लिमिट' ठंड के कारण।

दादाश्री : हाँ, यानी यदि तू ठंडा बनकर रहे, तो वैसा ही शील उत्पन्न होगा। ओर, उग्रता तो कमज़ोरी ही है।

प्रश्नकर्ता : अब ये बच्चे कुछ शरारत करें, वहाँ पर गुस्सा करना हो तो नहीं होता है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन करने की ज़रूरत ही नहीं है न! यदि गुस्सा नहीं करें, तो आपका ताप बढ़ेगा। यह मैं गुस्सा नहीं करता तो मेरा ताप इतना ज़्यादा लगता है, मेरी नज़दीक रहनेवाले सभी लोगों को कड़ा ताप लगता है जबकि गुस्सा तो खुली निर्बलता है, सिर्फ, यों ही ताप लगे ऐसा है। गुस्सा करने की ज़रूरत ही नहीं है, ताप ही लगता है उन्हें।

क्रोध हो जाए, वहाँ अभी लीकेज हो जाता है मतलब युज़लेस हो जाता है और जब बहुत क्रोध हो जाए तो वहाँ इंसान बिल्कुल समाप्त ही हो जाता है। क्रोधित होनेवाला तो ऐसे काँपता भी है। वह कितनी भारी निर्बलता कहलाएगी? और भगवान महावीर कैसे होंगे? ऐसे कोई मारे, गालियाँ दे फिर भी कुछ नहीं! हमें ऐसा, देखकर (वैसा) ही बन जाना है।

सहनशीलता वही सामर्थ्यवान

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, ज़रूरत से ज़्यादा ठंडा होना, वह भी एक प्रकार की कमज़ोरी ही है न?

दादाश्री : ज़रूरत से ज़्यादा ठंडा होने की ज़रूरत ही नहीं है। हमें तो लिमिट में रहना है, उसे 'नॉर्मेलिटी' कहते हैं। बिलो नॉर्मल इज़ द फीवर, अबव नॉर्मल इज़ द फीवर, नाइन्टी एट इज़ द नॉर्मल। यानी हमें नॉर्मेलिटी ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो फिर यदि कोई मेरा अपमान करे और मैं शांति से बैठा रहूँ, तो वह निर्बलता नहीं कहलाएगी?

दादाश्री : नहीं। ओहोहो! अपमान सहन करना, वह तो महान बलवानपना कहलाएगा! अभी मुझे कोई गालियाँ दें, तो मुझे कुछ भी नहीं होगा, उसके लिए मन भी नहीं बिगड़ेगा, वही बलवानपना है! और निर्बलता तो, ये सब किच-किच करते ही रहते हैं और जीवमात्र लड़ते ही रहते हैं। वह सारी निर्बलता कहलाती है! यानी शांति से अपमान सहन करना, वह महान बलवानपना है। और ऐसा अपमान एक ही बार लांघ जाएँ, एक स्टेप लांघ जाएँ न, तो सौ स्टेप लांघने की शक्ति आ जाएगी। आपको समझ में आया न?

सामनेवाला यदि बलवान हो, तो जीवमात्र उसके सामने निर्बल हो ही जाता है। वह तो उसका स्वाभाविक गुण है। लेकिन यदि निर्बल व्यक्ति आपको छेड़े फिर भी आप उसे कुछ भी नहीं करो, तो वह बलवानता कहलाएगा।

खुद की शक्ति होने के बावजूद भी इंसान सामनेवाले को तंग नही करे, खुद के दुश्मन को भी तंग नहीं करे, वह बलवानपना कहलाता है। अभी कोई आप पर गुस्सा करे और आप भी उस पर गुस्से हो जाओ तो वह कमज़ोरी नहीं कहलाएगी? यानी मेरा क्या कहना है कि ये क्रोध-मान-माया-लोभ, ये सब ही निर्बलताएँ हैं। जो बलवान है, उसे तो क्रोध करने की ज़रूरत ही कहाँ रही? लेकिन ये तो क्रोध का जितना ताप है, उस ताप से सामनेवाले को वश में करने जाते हैं, लेकिन जिनमें क्रोध नहीं है, उनके पास कुछ तो होगा न वास्तव में? उसका शील नामक जो चारित्र है, उससे जानवर भी वश हो जाते हैं। बाघ, सिंह, सभी दुश्मन, पूरा लश्कर वश हो जाता हैं।

जगत् में बदलाव होता है शीलवान के निमित्त से

प्रश्नकर्ता : अपने यहाँ जो वैज्ञानिक तरीके से चर्चा होती है, उससे इतना फर्क ज़रूर पड़ा है कि सामनेवाले लोग भले ही कैसा भी बर्ताव करें लेकिन हम समझ सकते हैं कि इसका कुछ जवाब देने जैसा नहीं है।

दादाश्री : अब इससे आगे समझना है। इस विज्ञान का फल इससे भी आगे का जानना का है। आप जो यह बाड़ बनाते हो, वह बाड़ बनाने के बाद जो चोरियाँ नहीं हो सकती, बाड़ के बिना भी वे चोरियाँ न हों, ऐसा यह विज्ञान है। और बाड़ बनाने के बाद तो सँभालने के लिए आदमी रखने पड़ते हैं। यानी आपको जो ऐसा भाव है कि 'ऐसे मेरा अपमान न कर सकेगा,' इसलिए आप बाड़ बनाकर रक्षण करते हो। अब जितना ताप बाड़ बनाकर रक्षण करनेवाले का सामनेवाले को लगता है, उससे ज़्यादा जो रक्षण नहीं करे, उसका ज़बरदस्त शीतल ताप होता है। बड़े बड़े लुटेरे भी पानी-पानी हो जाते हैं! शीलवान का ताप! जैसा ताप सूर्यनारायण का भी नहीं हो, वैसा ताप।

सर्व गुण समाएँ शील में

प्रश्नकर्ता : शील किसे कहेंगे, सभी को समझ में आए ऐसे ज़रा विस्तार से समझाइए न। मेरे खयाल में ऐसा है कि शील अर्थात् सदाचार।

दादाश्री : नहीं, सदाचार और शीलवान में बहुत फर्क है। सदाचार तो सामान्य चीज़ है।

शील में तो सभी चीज़ें आ जाती हैं। कोई चीज़ बाकी नहीं रहती। खास तौर पर हम शील किसे कहते हैं? 'स्त्री चारित्र' से संबंधित बात में शीलवान कहते हैं, वह फर्स्ट (प्रथम)।

शील (के ध्येय) वाले को स्त्री का विचार तक नहीं आता, विषय का विचार आया मतलब शील में कमी है अभी। लेकिन फिर भी जिसे विचार आते हैं उसे कहते हैं कि ये थोड़े समय में ये विचार चले जाएँगे और वह शीलवान ही है! शील में (शील के ध्येयवाले को) कितने भी खराब विचार आएँ, फिर भी, क्योंकि वह शील प्राप्त करनेवाला है, इसलिए हम कारण का कार्य पर आरोपण करते हैं।

दूसरा, किंचित्मात्र भी, खुद के दुश्मन को भी दु:ख देने के भाव न हों, किंचित्मात्र हिंसक भाव न हो, तब 'शील' कहलाता है। जीवमात्र को किंचितमात्र दु:ख न हो, ऐसी उसकी भावना हो। यदि मैं तेजी से चलूँगा तो भी पैरों की आहट से यह कुत्ता जो सो गया है, वह जाग जाएगा, उन्हें ऐसा भी विचार आएगा। शीलवान कैसा होता है? कुत्ते की भी निंद खराब न करे और कुशील तो ऐसा होता है कि कुत्ते को दुतकारकर निकाल दे और नींद उड़ा दे।

किसी को ज़रा सा भी, किंचित्मात्र दु:ख नहीं पहुँचाए, ऐसे अपने विचार, भाव, और बर्ताव चाहिए और चारित्र बहुत उच्च होना चाहिए। और वास्तव में तो मॉरैलिटी-सिन्सियरिटी सबकि साथ आ जाना चाहिए।

मॉरैलिटी और सिन्सियरिटी वहाँ शील

मनुष्यों ने कभी मॉरैलिटी को बेच नहीं दी होती न, तो कोई दु:ख नहीं रहता। यह तो मॉरैलिटी ही बेच खाई, सिन्सियरिटी ही बेच खाई। उसी के दु:ख हैं ये सब। मॉरैलिटी और सिन्सियरिटी दोनों इकत्रित करें तभी शीलवान कहलाएगा।

शील तो बहुत ऊँची चीज़ है। यह मॉरैलिटी और सिन्सियरिटी, वे तो शील में समा जाते हैं लेकिन यह जो शील है, वह मॉरैलिटी और सिन्सियरिटी में नहीं समा सकता। इतने बड़े बर्तन में इतना छोटा बर्तन समा जाता है। लेकिन इस मॉरैलिटी और सिन्सियरिटी में हेतु शील का है।

भगवान की भाषा में शील की परिभाषा

भगवान ने शील किसे कहा है? जिसे किसी भी जीव को मन से, वाणी से, काया से, कषाय से या अंत:करण से कभी भी दु:ख नहीं देने का भाव है, वह शीलवान है। उसे जगत् में कोई दु:ख कैसे दे सकता है?

प्रश्नकर्ता : तो दादा मन-वचन-काया से जीवमात्र को किंचित्मात्र भी दु:ख नहीं देना, यह जो भाव है, वह शीलवान?

दादाश्री : वह भाव तो है ही। वह तो अहिंसक भाव कहलाता है। वह चीज़ अलग है और यह तो स्त्री संबंधित विषय जीता, वह सबकुछ जीत गया।

क्रोध-मान-माया-लोभ को वश करना और दूसरा अब्रह्मचर्य को वश करना, दो ही चीज़ें हैं न! और तीसरी कोई चीज़ है नहीं। मुख्य ब्रह्मचर्य है।

सिद्ध होता है ब्रह्मचर्य दृढ़ निश्चय से

प्रश्नकर्ता : दादा, अब दृढ़ निश्चय हो गया है कि विषय को कम्प्लीट निर्मूल ही कर देना है। अगले जन्म का तो जोखिम ही नहीं। अभी दादा मिलें हैं तो पूरा ही कर लेना है।

दादाश्री : पूरा ही कर लेना है। ऐसा निश्चय डिगे नहीं इतना खयाल रखना।

ब्रह्मचर्य सँभल पाए, तो चेहरे पर कुछ नूर आएगा। नूर तो होना ही चाहिए न? वर्ना किस जाति के हो, वही पता नहीं चलेगा न? ब्रह्मचर्य से नूर आता है। काला-गोरा नहीं देखना है। कितना भी काला हो, लेकिन उसमें नूर होना चाहिए। बिना नूर के लोग किस काम के? वर्ना ब्रह्मचर्य का तेज तो ऐसा होए कि सामनेवाली दीवार पर पड़े! फॉरिनवाले देखें तो यों देखते ही खुश हो जाए कि इन्डियन ब्रह्मचारी आए हैं, ऐसा होना चाहिए। कोई गोरा होता है, कोई काला होता है, वह नहीं देखना है, ब्रह्मचर्य देखना है। इसलिए ऐसा कुछ करो कि ब्रह्मचर्यव्रत रोशन हो जाए।

प्रकट होता है नूर, ब्रह्मचर्य से

सच्चा ब्रह्मचर्य तो वह है कि मुँह पर ज़बरदस्त नूर हो। और ये ज्ञानी के साथ रहते हैं, फिर भी इतना कुछ उपार्जित नहीं किया। लाइट तो आनी चाहिए न! यदि ब्रह्मचर्य की लाइट न आए, तो ब्रह्मचर्य कहलाएगा ही कैसे? लाइट आनी चाहिएज् वाणी सुंदर और सुकोमल हो जानी चाहिए। सबकुछ दीप्यमान हो जाना चाहिए। सुगंध आनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, अब अंदर यों निश्चय तो हो ही गया है!

दादाश्री : निश्चय तो हो ही गया, तेरा (निश्चय) हो ही गया है, चेहरे पर नूर आ गया न?

प्रश्नकर्ता : अब थोड़ा-थोड़ा आनंद आने लगा है।

दादाश्री : अभी तो यर्थाथ तप करेगा, जितना तप करेगा उतना ही आनंद आएगा। यही तप करना है, और कोई तप नहीं। लोग जो तप करने को कहते हैं न, वह यही तप करना है।

प्रश्नकर्ता : ब्रह्मचर्य और शील हों, तो सभी कषाय तो ओटोमेटिक वश हो जाते हैं न?

दादाश्री : विषय का विचार ही नहीं आए, जिन्हें क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं हो, वे शीलवान कहलाते हैं। सिर्फ यह स्त्री का विषय ही नहीं, क्रोध-मान-माया-लोभ भी खुद के वश हो गए हों तो वह शीलवान कहलाएगा। जो क्रोध-मान-माया-लोभ खुद को दु:ख दें, औरों को दु:ख नहीं दें, वे 'कंट्रोलेबल' कहलाते हैं। वहीं से भगवान ने उसे शील कहा। शील यानी सब से बड़ी चीज़।

शील किसे कहते हैं कि क्रोध के सामने क्रोध से जबाब नहीं दे, मान के साथ मान से जबाब नहीं दे, रागी के साथ राग से जबाब नहीं दे, वे शील कहलाता है।

शीलवान के लक्षण

प्रश्नकर्ता : शीलवान के लक्षण क्या-क्या होते हैं, वे जानने हैं।

दादाश्री : शीलवान में मॉरेलिटी, सिन्सियरिटि, ब्रह्मचर्य आदि सभीकुछ होता है और फिर सहज नम्रता होती है। सहज यानी नम्रता रखनी नहीं पड़े। सहज रूप से सामनेवाले के साथ नम्र रहकर ही बात करें। और, सहज सरलता होती है। सरलता रखनी नहीं पड़े। जैसे मोड़े वैसे मुड़ जाएँ। उनको संतोष सहज होता है। यदि हम इतने से ही चावल और कढ़ी परोसें न, तो वे सिर उठाकर देखेंगे नहीं। सहज संतोष! उनकी क्षमा भी सहज होती है। उनको अपरिग्रह और परिग्रह दोनों सहज होते हैं। यानी ऐसी कई बातें सहज हों तब समझना कि ये भाई शीलवान में आए हैं!

आप धौल लगाओ और फिर उसकी आँखें देखे तो आपको क्षमा दे रही होती हो, तब वही सहज क्षमा कहलाती है। 'मुझे क्षमा चाहिए' ऐसा कहना नहीं पड़ता। आप धौल लगाएँ, तब उसकी आँखों में सँपोले नहीं खेलते! पता नहीं चले कि सँपोले खेल रहे हैं, इसकी आँखों में?

आप इस इफेक्ट को क्या समझो? हम कॉज़ेज़ को भी जानते हैं और इफेक्ट को भी जानते हैं। हमें कॉज़ेज़ और इफेक्ट दोनों का ज्ञान है। इसलिए सहज क्षमा रह सकती है।

जितना इगोइज़म डल, उतना शीलवान होता जाए

प्रश्नकर्ता : क्या शील इगोइज़म (अहंकार) से प्राप्त किया जा सकता है? उसमें इगोइज़म रहता है?

दादाश्री : इगोइज़म! इगोइज़म यानी, वह तो शत्रु है इसका।

प्रश्नकर्ता : यदि इगोइज़म इसका शत्रु है तो फिर यह विकसित किया जा सके ऐसा विषय (सब्जेक्ट) नहीं है?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। इगोइज़म से इसकी शुरूआत होती है। फिर इगोइज़म डल हो जाता है और फिर अपने आप ही यह चलता रहता है।

जैसे जैसे शीलवान होता जाए, वैसे वैसे इगोइज़म डल होता जाता है। और इगोइज़म खत्म होने के बाद फिर शील प्रकट होता है। क्रमनुसार यह सब होता है।

शीलवान यानी निर्भय

प्रश्नकर्ता : क्या शीलवान पुरुष मोक्ष में जा सकता है?

दादाश्री : हाँ, और वही औरों को मोक्ष दे सकता है!

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह गुण ग्रहण करने की जो बात है, वृत्तियों पर कंट्रोल तो, अहंकार से हुआ।

दादाश्री : ऐसे जो अहंकार से हो, वह काम का नहीं है, सहज रूप से होना चाहिए। तो उसे शीलवान कहते हैं। वृत्तियों पर कंट्रोल करे, उसमें तो हमेशा अहंकार है। त्याग करे तो वह अहंकार है और ग्रहण करना भी अहंकार है। सहज के सामने कोई त्याग भी नहीं और अत्याग भी नहीं।

शीलवान का ताप पूरा जगत् को लगता है। शीलवान बनो, महावीर के शिष्य हो। शीलवान नहीं बनना चाहिए? तो यों ऐसे भयभीत होने के पश्चात शीलवान बन सकेंगे? भय किसका? इस दुनिया में भय किसका होता है? शीलवान यानी निर्भय। भगवान भी फिर उस पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगा सकते। बोलो, भगवान भी जिस पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगा सकें, तो फिर वह कैसी स्थिति होगी!

होते हैं प्रतापी शीलवान पुरुष

आचार्य तो कैसे होने चाहिए? एक आँख दिखाएँ तो सौ शिष्यों को पसीना छूट जाए। उन्हें डाँटना नहीं पड़े, सिर्फ आँखों से ही काम हो जाए। शील ही काम करता है। आचार्य तो शीलवान होते हैं। इन शिष्यों के सिर पर तो भय चाहिए। पुलिसवाले का भय नहीं चाहिए, बल्कि शील का भय चाहिए। सिर्फ हवा से ही भय रहे। हमारे पास ऐसा कोई कानून नहीं है, फिर भी सब नियम में कैसे रहते हैं? हमारे शील से। वीतराग के यहाँ कानून नहीं होते। वे तो पक्षपात से दूर होते हैं। आपको दो उपवास करने की इच्छा हो, तो महाराज आशीर्वाद देते हैं कि, 'दो उपवास कर।' तो उसे अंदर वही रहा करे और घोटाला नहीं करे तो वह वचनबल कहलाता है। जबकि यह तो शिष्य अंदर ही अंदर बड़बड़ाते हुए महाराज की आज्ञा का पालन करते हैं। सच्चे गुरु और सच्चे शिष्य के बीच प्रेम की ऐसी कड़ी होती है कि गुरु भले ही कुछ भी बोलें लेकिन शिष्य को बहुत अच्छा लगता है।

वीतरागों के समय में आचार्य, महाराज कितने समझदार होते थे? यदि ८० वर्ष के आचार्य महाराज हों और १८ वर्ष का नया दीक्षित साधु हो, और वह बड़े आचार्य से कहे कि, 'महाराज, ज़रा मेरी बात सुनेंगे?' तब महाराज को इतना धक्का लगता है कि मेरी इतनी अधिक अजागृति कि सामनेवाले को, छोटे को, ऐसा कहना पड़ा। आचार्य तो सामनेवाले का सुनते हैं। अरे, विधर्मी की भी ठंडे कलेजे, ज़रा भी कषाय किए बिना सुनते हैं।

शील आए तो सभी शक्तियाँ आ जाती है। थोड़ा बहुत शीलवान बन जाए न, तो शक्ति आ जाती है। शीलवान की सुगंध आती है।

वचलबल शीलवान का

इस जगत् के सभी ज्ञान शुष्कज्ञान हैं। शुष्कज्ञानवाले कोई शीलवान पुरुष हो यानी शास्त्रों से ऊपर होता है तो भी उनका वचनबल रहता हैं, शीलवान पुरुष के शब्द कुछ काम करते हैं, अन्यथा और कोई बोलें उसके शब्द काम नहीं करते। एक ही दिन अगर ज़रा सा विषय का विचार भी आ गया हो, तो काम नहीं करता। एक ही दिन अगर लक्ष्मी का विचार आ

जाए, तो काम नहीं करता। क्योंकि वह लीकेज कहलाता है।

एक बार भी झूठ बोलने से मनुष्य को बहुत ही नुकसान होता है, ज़बरदस्त नुकसान होता है। लेकिन उसे खबर नहीं है कि कितना नुकसान उठाकर वह खुद अपना रक्षण कर रहा है। एक बार चोरी करने से ज़बरदस्त नुकसान होता है लेकिन उसकी खबर नहीं है। इससे क्या नुकसान हो गया उसकी खबर नहीं है। यह नुकसान सूक्ष्म में होता है। इसलिए उसका प्रताप, उसका शीलवानपना सब खत्म हो जाता है। इंसान बेच देता हैं सारा शीलवानपना। फिर उसका प्रभाव नहीं पड़ता।

मेरे शब्दों ऐसे है न, वचनबलवाले हैं। शीलवान पुरुष के शब्द हैं। सत्ताइस साल से जो खुद देह के मालिक नहीं हैं, जो मन के मालिक नहीं है, जो वाणी के मालिक नहीं हैं, उनके शब्द हैं ये तो।

वचन का बल होता है वह, क्योंकि जितना उनका शील और चारित्र, उतना ही ज़्यादा बल! और चारित्र यानी कम्पलीट मॉरेलिटी, कम्पलीट सिन्सियरिटी, वह है चारित्र। कम्पलीट मॉरेलिटी, एक सेन्ट भी कम नहीं। कम्पलीट सिन्सियरिटी, एक सेन्ट भी कम नहीं। जहाँ ऐसा चारित्र हो वहाँ सभी कुछ चलता है।

जिनकी वाणी से किसी को किंचित्मात्र दु:ख नहीं हो, जिनके वर्तन से किसी को किंचित्मात्र दु:ख नहीं हो, जिनके मन में खराब भाव उत्पन्न हुए न हों वे हैं शीलवान। शील के सिवा वचनबल उत्पन्न नहीं हो सकता।

होते हैं शीलवान इन्फिरीयारिटी रहित

शीलवान यानी क्या? कि कोई मुझे गालियाँ देने आया हो लेकिन वह यहाँ आए और बैठा रहे, और हम कहें कि 'कुछ बोलिए, बोलिए न!' लेकिन वह एक अक्षर भी नहीं बोल पाए, वह है शील का प्रभाव! यदि हम सामने बोलने की (गाली देने की) तैयारी करें न, तो शील टूट जाएगा। इसलिए तैयारी नहीं करनी चाहिए। जिसे जो करना हो वह करो। सर्वत्र 'मैं ही हूँ' कहना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि हमें खींच ले जाने के प्रयत्न हो रहे हों तो?

दादाश्री : वे कुछ भी खींच ले जाए लेकिन हमें नहीं खिंचना है। तब वह भले ही कुछ भी करे, फिर भी उसका चलनेवाला नही।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसे खिंचना नहीं है, उतने संकल्प में तो रहना ही पड़ेगा न?

दादाश्री : नहीं, खिंचना नहीं है, वह तो हमें स्वाधीन ही रहना है।

प्रश्नकर्ता : यानी हमें सहजस्थिति में ही रहना है।

दादाश्री : हाँ, सहजस्थिति में ही और संयोगवश जाना पड़े, ऐसा कुछ खींचा-तानी करनी पड़े, तो फिर हमें उस मामलें में लप्पन-छप्पन नहीं रखनी है।

प्रश्नकर्ता : तन्मयाकार नहीं होना है?

दादाश्री : उसमें बिल्कुल तन्मयाकार नहीं होना है। पहले शीलवानपना उत्पन्न होने दो। यह 'ज्ञान' देने के बाद, लोग दिन प्रतिदिन शीलवान होते जाते हैं। लोग जिन्हें प्रभावशाली कहते हैं, वह तो बहुत छोटी चीज़ है। वह तो जगत् के लोगों को भी होती है। लेकिन शीलवानपना तो, भगवान के सामने भी खुद को इन्फिरीयारिटी काम्प्लेक्स (भीति) नहीं लगता, और जिन्हें अगर भगवान के सामने इन्फिरीयारिटी काम्प्लेक्स नहीं लगता तो फिर लोगों के सामने तो लगेगा ही नहीं न? शीलवान! शील तो हर तरह से रक्षा करता है। देवलोक से रक्षा करता है, इन साँप, जीवजंतुओं और सभी जानवरों से रक्षा करता है, सभी से रक्षा करता है, इसलिए शील की ही ज़रूरत है।

वास्तविक अर्थ में शील मतलब कणमात्र गलत भाव नहीं हो

अपने सामने कोई प्रपंच कर रहा हो और यदि हम सामने तैयारी करें न, तो अपना चारित्रबल टूट जाता है। (वह) जितने प्रपंच करे तो भी खुद के प्रपंच से खुद ही फँस जाता है। लेकिन यदि आप तैयारी करने जाओगे, तो आप खुद ही उसके प्रपंच में फँस जाओगे। हमारे सामने तो बहुत सारे लोगों ने प्रपंच किया था, लेकिन वे प्रपंची फँस गए। क्योंकि हमें तो घड़ीभर के लिए भी (उल्टा) विचार नहीं आता। वर्ना यदि तैयारी करने का विचार आए न तो भी अपना चारित्रबल टूट जाता है, शीलवानपना टूट जाता है।

प्रपंच के सामने तैयारी करने के लिए हमें नए प्रपंच करने पड़ते हैं और फिर हम स्लिप हो जाते हैं। अपने पास तो वह हथियार है ही नहीं न! उसके पास तो वह हथियार है तो फिर वह भले ही करे न! फिर भी वह 'व्यवस्थित' है न, और फिर उसका हथियार उसे ही चोट पहुँचाता है, ऐसा 'व्यवस्थित है।'

शील उसे कहते हैं कि अंदर कणमात्र भी गलत भाव उत्पन्न नहीं होना चाहिए।

अत: शील ऐसा होना चाहिए। शील किसे कहते हैं कि कभी भी किसी जीव के लिए किसी भी भाव से, पाँच इन्द्रिय भाव से या अहंकार भाव से या कषाय भाव से अंत:करण से भी किंचित्मात्र भी खराब भाव उत्पन्न न हों। और जीवमात्र को नहीं मारने का भाव तो निरंतर रहे ही। मारने का भाव नहीं लेकिन उसे दु:ख नहीं हो ऐसे भाव से निरंतर रहे तो शीलव्रत उत्पन्न होता है और वे शील संस्कार उत्पन्न होता है।

नहीं रहते हिंसकभाव शीलवान में

सिंह मांसाहार करके तृप्त होकर बैठा हो, और यदि शीलवान वहाँ से जा रहे हों और अगर सिंह देख ले तो उल्टियाँ होने लगें! खाया हुआ सारा मांस निकल जाए। उस समय देखने से।

प्रश्नकर्ता : देखते ही!

दादाश्री : उन्होंने कुछ कहा नहीं है, शीलवान कुछ बोले नहीं है, वहाँ मेरा कुछ ग्रहण नहीं किया, तब ऐसा असर होता है, उनका!

प्रश्नकर्ता : आबु में वह शांतिविजयजी महाराज थे न, उनकी चारों ओर साँप या सिंह वगैरह बैठे रहते तो उन्हें कुछ होता नहीं था, सिंह उन्हें कुछ नहीं करता था। लोग ऐसा कहते थे। तो किस आधार पर ऐसा होता होगा?

दादाश्री : लोगों में ऐसी शक्तियाँ आ सकती हैं। यदि अपने मन में से सारे हिंसकभाव चले जाएँ न, तो कोई कुछ नहीं करेगा। उनके पास हिंसकभाव भूल जाएँगे वे जानवर, खुद हिंसक है ऐसे भाव भी भूल जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या हिंसक भाव ही निकल जाता है?

दादाश्री : भाव चेन्ज हो (बदल) जाता है। हमारे पास कोई आए, लड़ते-लड़ते आए हों लेकिन मुझे देखते ही लड़ाई-झगड़ा सबकुछ गायब हो जाता है।

शील वहाँ साँप नहीं छूते

इस जगत् का एक नियम इतना सुंदर है कि पूरे कमरे में सभी जगह साँप बिछे हुए हों, एक इंच भी खाली जगह नहीं हो, फिर भी यदि उस कमरे में अँधेरे में शीलवान प्रवेश करे तो साँप उस शीलवान को छूएँगे तक नहीं, यह जगत् इतना नियमबद्ध है। सर्प मतलब कमज़ोर चीज़ें कहलाती हैं, जो ज़हरीली चीज़ें हैं। क्योंकि साँप को शील का इतना ज़्यादा ताप लगता है कि दस फुट की दूरी से ही सभी साँप इधर-उधर हो जाते हैं और एक-दूसरे पर चढ़ जाते हैं!

साँप उनकी हवा (सुगंध) से ही खिसक जाएँ सभी। क्योंकि अगर साँप ज़रा सा भी उन्हें छूए तो साँप जल जाए। अंधेरे में भी साँप एक-दूसरे पर चढ़ जाएँ और रास्ता दे दें। यानी शील का पभाव ऐसा है कि कोई भी उनका नाम नहीं दे!

'शीले सर्प न आभडे, शीले शीतल आग,
शीले अरी, करी, केसरी सब जावे भाग।'

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि शीलवान पुरुष हो, तो उनके ताप से साँप भी खड़े नहीं रहते। इन मनुष्यों पर इस शील का असर होता है वह ठीक है, लेकिन यह जो साँप पर भी उनका असर होता है, वह थोड़ी कवितामय बात नहीं है आपकी?

दादाश्री : पहले साँप पर असर होना चाहिए। यदि साँप पर न हो तो फिर अर्थ ही क्या है? लोग तो फिर भी बुद्धिशाली हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन, साँप को क्या ऐसा पता चल जाता है कि ये शीलवान है? क्या शीलवान का तेज साँप तक पहुँच जाता है?

दादाश्री : बेशक। शीलवान तो तुरंत ही पहचान लिए जाते हैं। उनका तो वातावरण ही अलग होता है।

जिनमें हिंसा का एक भी परमाणु नहीं, उन्हें मारनेवाला कौन? साँप नज़दीक ही हो, तब भी वह उसे मार नहीं सकेगा। शीलवान को देखते ही हाथी, सिंह सभी भाग जाएँ। वहाँ पर बाघ ठंडा हो जाता है। और इन्हें तो, मच्छरदानी बाँधते हैं तो भी मच्छर काट जाते हैं। इन्हें क्या कहे? इनका शील कहाँ गया? मच्छरदानी बाँधते हैं फिर भी काट जाते हैं! उसे कैसे पहुँच पाएँ?

अरे, देव भी शीलवान से डरते हैं और उनकी लिहाज रखते हैं। दुर्जन को ताप लगे, सज्जन को शांति लगे, ऐसा है शील का दर्शक। चारों गतियों में से सिर्फ मनुष्य में ही शील नामक गुण होता है।

शील कब उत्पन्न होता है?

प्रश्नकर्ता : शील कब उत्पन्न होता है?

दादाश्री : 'ज्ञानीपुरुष' से ज्ञान मिलने के बाद खुद का फुरसत के समय का उपयोग शील के लिए करे। शील यानी सामनेवाला यदि लड़ाई की तैयारी कर रहा हो, तो उनके सामने हम लड़ाई की तैयारी नहीं करे। जो लड़ाई की तैयारी करता रहता है, उसका सारा लीकेज है, शील का पूरा लीकेज। फिर शील खत्म ही हो जाता है।

ऐसा है कि किसी संयोग में लड़का सामने हो जाए, किसी संयोग में वाइफ सामने हो जाए, उस समय यदि आप आप आक्रमक व्यवहार करते हो तो आपका शील खत्म हो जाता है। उससे अच्छा तो हमें देखते रहना है कि 'यह मशीन कुछ बिगड़ गई लगती है।' तो मशीन कहाँ से बिगड़ गई है, वह देखते रहना है। वर्ना लोग तो क्या करते हैं कि 'तू ऐसी है, तू वैसी है' कहा कि पूरा हो गया, शील उसका खत्म हो गया। डराने से तो शीलवानपना टूटता जाएगा और आप में निर्बलता बढ़ती जाएगी।

प्रताप-शीतल-गंभीर और अडिग ये हैं गुण ज्ञानी के

ज्ञानीपुरुष में कौन से गुण होते हैं, क्या वह जानते हो, यर्थाथ ज्ञानी होते हैं, संपूर्ण ज्ञानी? तो कहते हैं कि सूर्यनारायण जैसा प्रताप होता है और सौम्यता, चंद्र जैसी सौम्यता होती है। इन लोगों में क्या होता है? एक ही गुण रहता है, या तो सौम्यता होती है या फिर प्रताप होता है। दोनों गुण एकसाथ नहीं होते। विरोधाभासी गुण हैं ये दोनों। लेकिन ज्ञानी में दोनों एक साथ होते हैं, सौम्यता और प्रताप।

शीलवान की सौम्यता जैसी कोई सौम्यता नहीं होती। इसलिए शीलवान में दोनों गुण प्रकट हुए होते हैं। सौम्यता ज़बरदस्त होती है और प्रताप भी ज़बरदस्त होता है।

यदि कोई शीलवान व्यक्ति हो तो उन्हें मेरा ताप नहीं लगेगा। शीलवान यानी कि चारित्रवान व्यक्ति होते हैं, वर्ना जिसका चारित्र ढीला हो, ऐसे लूज़ चारित्रवालें को बहुत ताप लगता है।

मुझे देखते ही घबरा जाते हैं वहीं से मैं समझ जाता हूँ कि भाई साहब, देखते ही घबरा ऊठता है, तो क्या माल होगा तेरे अंदर? और कुछ लोगों के लिए तो, मैंने कहा था कि, 'हम घर में बैठे हों तब, देखो वह बाहर बरामदे में आ रहा है न, लेकिन यहाँ तक नहीं आ सकेगा, वहीं से वापस चला जाएगा।' वहीं से वापस चला गया। नहीं चढ़ सकते भाई। कैसा घनचक्कर है? हवा से ही भाग जाता है! भागो (यहाँ से)!

प्रश्नकर्ता : क्यों भाग जाता है?

दादाश्री : ताप लगता है, ज्ञानीपुरुष का ताप! यह तो प्रचंड ताप कहलाता है। सूर्यनारायण से भी अधिक ताप लगता है। सूर्यनारायण का तो छतरी लगाने पर ठीक लगता है। लेकिन इसमें तो आप के लाख छतरियाँ लगाने पर भी कुछ नही होता। यह ताप तो कड़ा ताप लगता है और यदि ऐसा नहीं हो तब, तो लोगों का कल्याण ही नहीं होगा न!

तीसरा गुण, वे समुद्र जैसे गंभीर होते हैं। चाहे कैसी भी निजी बातें करनी हों और वे अपनी निजी बातें जानते हों, फिर भी किसी को बताते नहीं हैं। बहुत गंभीर होते हैं।

और हिमालय जैसी स्थिरता होती हैं, इसलिए जब वास्तव में यहाँ पर बहुत मुश्किलों का टाइम आ जाए न मुंबइ में, उस समय यदि हम उनके पास बैठें रहे हों, तो बिल्कुल भी डिगना नहीं पड़ेगा हमें। ऐसी स्थिरता होती है। वे डिग नहीं जाते। इसलिए ऐसे सभी बहुत सारे गुण होते हैं।

व्यवहार चारित्र का उच्चत्तम पद शीलवान

प्रश्नकर्ता : यह शील जो ऐसा उत्पन्न हुआ क्या वह ऐसी चीज़ है कि जिसका विकास किया जा सके? शील को विकसित कर सकते हैं?

दादाश्री : शील जानने की चीज़ है। शील में क्या आता है? क्या क्या, होना चाहिए तो शील कहलाएगा? जैसे कढ़ी यानी वह कोई एक चीज़ नहीं है, सभी चीज़ों का सम्मिश्रण हैं। वैसे ही यह शील भी कोई चीज़ नहीं है, सम्मिश्रण हैं यह।

शील तो महान गुण है। जिसका किसी के साथ भी तुलना नहीं हो सके, ऐसा गुण है! किसी काल में कोई ऐसे दो-पाँच हुआ करते थे। लेकिन अभी तो उनका अभाव है।

शीलवान तो सबसे बड़ा रत्न कहलाता है। ऐसा शीलवान मैं भी नहीं था और आज भी नहीं हूँ। शीलवान तो व्यवहार चारित्र का सबसे ऊँचा पद है।

वहाँ पर पहुँच ने के लिए ज़रूरत है, पुरुषार्थ की

प्रश्नकर्ता : दादा जैसा प्रताप, दादा जैसी खुमारी और शीलवानपना, दादा जैसा चाहिए। मैंने आप में ऐसा देखा, तो मैं तो आफ़रीन हो गया हूँ। ओहोहो! क्या खुमारी है! दरअसल खुमारी! यह *पोतापणुं* (मेरापन) चला जाए, तभी ये गुण प्रकट होते हैं, ऐसा हुआ न?

दादाश्री : बाद में उत्पन्न होता है। एक ओर ये सभी गुण उत्पन्न होते हैं। उस (*पोतापणा* को) लेकर सबकुछ अटक गया है न! और यदि उसके (*पोतापणा*) साथ मतभेद पड़ गया, तो फिर कल्याण हो गया!

प्रश्नकर्ता : उसके साथ मतभेद पड़ जाए लेकिन वास्तव में वह सीट वगैरह तो है ही न? व्यवहार की सीट या फिर वह सब तो अपनी-अपनी जगह पर हैं ही न?

दादाश्री : व्यवहार है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : 'खुद' उस सीट पर नहीं बैठे, 'खुद' खुद की सीट पर आ जाए, लेकिन वह सीट,

जिस पर नहीं बैठता है, वह सीट वहाँ पर है न? ऐसा है न? वह अस्तित्व, ऐसा कुछ है न वहाँ पर?

दादाश्री : वह ढूँढ ही नही। अपने आप ही होता है। वह तो कुदरत ही बिठा देती है न! तुझे ढूँढनी नहीं है और यदि बैठना पड़े तो बैठ जाना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वहाँ से खुद को उठाकर 'खुद' खुद के पद पर।

दादाश्री : यह पुरुषार्थ है। यह पुरुषार्थ और वह व्यवस्थित।

शील विकसित होता है ब्रह्मचर्य से

प्रश्नकर्ता : अपनी प्रकृति पर इस शील का रिफ्लेक्शन कैसे पड़ता है?

दादाश्री : शील का? वह तो ब्रह्मचर्य। (वीर्य वह खुराक के) सभी रसों में से अंतिम रस है और उनका साररूप है। जैसे दूध में से घी बनता है न, उसी तरह ब्रह्मचर्य का (वीर्य) है। अंतिम में अंतिम चीज़ है वह, बनाई हुई। अब वह बेकार, यूज़लेस जाए, तो फिर खत्म हो जाती है और शुष्क दिखती है। जैसे अरंडी का तेल पिया हो ऐसा दिखता है। लेकिन वह भीतर (सुरक्षित रखें तो) तेजस्वी दिखे, ऊर्ध्वगमन करता है। जो टिके उसकी तो बात ही अलग है न!

इसलिए शील का विकास करो। शील का जो प्रताप है वह आश्चर्यजनक है! भगवान महावीर के पास, शेर और बकरी एक साथ पानी पीते थे, इतिहास ऐसा कहता है और प्रमाण सहित बात है यह तो।

अब यदि लोग ऐसा देखें न, तो क्या कहेंगे? कि ओ हो हो, कैसी सिद्धि है! यह तो उनका शील है। वे सिद्धि का उपयोग नहीं करते थे। यदि एक सिद्धि का उपयोग करते तो पूरी दुनिया इधर-उधर हो जाए! देखो महावीर को! ज्ञानी सिद्धियों का उपयोग नहीं करते। उनका शील इतना अधिक होता है कि उन्हें देखते ही सभी आनंदित हो जाते हैं।

शीलवान का चारित्रबल

शील का प्रभाव ऐसा है कि जगत् में कोई उनका नाम नहीं ले। लुटेरों के बीच रहता हो, सभी उँगलियों में सोने की अँगूठियाँ पहनी हों। यहाँ पूरे शरीर पर सोने के आभूषण पहने हों और लुटेरे मिल जाएँ, लुटेरे देखंगे ज़रूर, लेकिन छू ही नहीं सकेंगे। बिल्कुल भी घबराने जैसा जगत् है ही नहीं। जो कुछ घबराहट है वह आपकी ही भूल का फल है, ऐसा हम बताने आए हैं। लोग तो ऐसा ही समझते हैं कि जगत् अनुमानवाला है।

किंचित्मात्र आपको कोई कुछ कर सके ऐसा है ही नहीं, यदि आप किसी में दखलंदाज़ी नहीं करो तो, उसकी मैं आपको गारन्टी लिख देता हूँ।

जो भूल रहित हैं, उनका तो लुटेरों के गाँव मे भी कोई नाम देनेवाला नहीं है! उतना अधिक तो प्रताप है शील का । पूरे जगत् में शीलवान का-चारित्रवान का कौन नाम ले सकता है! पूरा जगत् खुद की मालिकी का है। अरे, एक बाल भी कोई बांका नहीं कर सके, ऐसी स्वतंत्र मालिकीवाला हैं यह जगत्।

जिन लोगों में चारित्र नहीं हो, वे लोग यदि चारित्रवान को देखते हैं तो तुरंत ही प्रभावित हो जाते हैं। जिस बारे में खुद खराब है, उस बारे में सामनेवाले के अच्छे गुण देखे तो तुरंत ही प्रभावित हो जाता है। क्रोधी व्यक्ति अन्य किसी शांत पुरुष को देखता है तो भी प्रभावित हो जाता है। इस जगत् में जहाँ आपका प्रभाव पड़ने लगे और तब आप, आप विषय खोजो तो फिर क्या होगा? शिक्षक यदि विद्यार्थी से सब्ज़ी मँगवाए, और कुछ मँगवाए तो फिर उसका प्रभाव रहेगा क्या? इसी को 'विषय' कहा है। शीलवान का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि कोई गालियाँ देने का तय करके आया हो, तो भी उसके सामने आते ही जीभ सिल जाती है। ऐसा आत्मा का प्रभाव है! प्रभाव यानी क्या कि उसे देखने से ही लोगों को उच्च भाव होते हैं।

इस ज्ञान के बाद प्रभाव बढ़ता है। यह प्रभाव आगे चलकर चारित्र कहलाता है। बहुत ऊँचा प्रभाव हो, तब चारित्रवान कहलाता है।

चारित्रबल की पहचान क्या?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह चारित्रबल क्या है? चारित्रवान किसे कहते हैं?

दादाश्री : चारित्रबल में दो चीज़ें आती हैं। एक, ब्रह्मचर्य और दूसरा, किसी को किंचित्मात्र दु:ख नहीं देना, इन दोनों का गुणा हो तभी चारित्रबल उत्पन्न होता है।

व्यवहार चारित्र में मुख्य दो चीज़ें कौन सी हैं? एक विषयबंध। कौन सा विषय? तब कहें, स्त्री चारित्र विषय। और दूसरा क्या? लक्ष्मी संबंधी। जहाँ लक्ष्मी हो वहाँ पर चारित्र हो ही नहीं सकता।

प्रश्नकर्ता : जहाँ लक्ष्मी हो वहाँ चारित्र नहीं हो सकता, वह कैसे?

दादाश्री : वहाँ चारित्र कहलाएगा ही नहीं न! लक्ष्मी आई यानी लक्ष्मी से तो व्यवहार करना होता है सारा। हम लक्ष्मी नहीं ले सकते।

'चारित्रबल क्या है' उसकी पहचान किससे होती है? (तो कहे) और कुछ भी देखना नहीं है। भगवा कपड़े पहनता है या सफेद कपड़े पहनता है, वह नहीं देखना है। भाषा कैसी निकलती है, उस पर से चारित्रबल को पहचाना जाता है। चारित्रबल बढ़े तो तुरंत ही *प्रगमित* होता है (प्रकट होना)।

संसार में वाणी निकली, वह चारित्रबल की पहचान कहलाती है। (वह) वाणी मीठी-मधुरी, किसी को आघात नहीं लगे, प्रत्याघात नहीं लगे, उपघात (टकराव) नहीं लगे ऐसी वाणी (हो)। किंचित्मात्र दु:ख नहीं हो ऐसी वाणी निकले न, तो वह सब चारित्र ही है। हर कोई भी व्यक्ति कैसे बोलता है, उस पर से चारित्र पहचाना जाता है।

व्यवहार चारित्र - निश्चय चारित्र

प्रश्नकर्ता : 'चारित्र के बगैर मोक्ष नहीं और मोक्ष के बिना निर्वाण नहीं।'

दादाश्री : चारित्र! ये आपकी भाषा में चारित्र के बारे में आपको क्या समझ में आया, वह बताईए।

प्रश्नकर्ता : चारित्र यानी कि अच्छी तरह से बर्ताव करना वह है। जिसे स्ट्रेट फोरवर्ड कहते हैं जो टेढ़ा-मेढ़ा या क्रुकेड़ नहीं हो, वह चारित्रवान कहलाता है। प्रमाणिक होता है, ऑनेस्ट होता है, मॉरल होता है।

दादाश्री : ऐसे सीधे लोग तो बहुत मिलेंगे। उसे चारित्र कैसे कहेंगे? इस चारित्र को तो मोक्ष का कारण कहा है।

प्रश्नकर्ता : मोक्ष का कारण ठीक है।

दादाश्री : वह चारित्र तो, सीधा इंसान हो, उसकी वाह-वाह करेगा, कोई पैसे उधार दे कि बस वही और कोई कारण नहीं है। फिर भी कोई उलटा बोलते हैं। लेकिन यह चारित्र, क्या कहना चाहते हैं? चारित्र दो प्रकार के, एक निश्चय चारित्र और एक व्यवहार चारित्र। व्यवहार चारित्र मतलब किसी भी विषय पर वृत्ति नहीं। व्यवहार चारित्र यानी *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) चारित्र, आँखों से दिखाई दे ऐसा चारित्र और जब निश्चय चारित्र उत्पन्न हुआ कि भगवान बन गया, कहलाएगा। अभी तो आप सभी को 'दर्शन' है, फिर ज्ञान में आएगा, लेकिन चारित्र उत्पन्न होने में देर लगेगी। फिर भी अक्रम है न, इसलिए चारित्र शुरू होगा ज़रूर, लेकिन आपके लिए (आपको) उसे समझना मुश्किल है।

प्रश्नकर्ता : उसके लक्षण क्या होते हैं?

दादाश्री : ऐसा है न, वह निश्चय चारित्र बहुत कम होता है। जिसे आँखों से देखा और जाना जा सके, वह भी चारित्र नहीं कहलाता। बुद्धि से देखा-जाना जा सके वह भी चारित्र नहीं कहलाता। उसमें

तो आँखों का उपयोग नहीं होता, मन का उपयोग नहीं होता, बुद्धि का उपयोग नहीं होता। उसके बाद जो भी देखे-जाने, वह निश्चय चारित्र है। लेकिन इसमें जल्दबाज़ी करने जैसा नहीं है। यह 'दर्शन' तक पहुँचा है, इतना भी बहुत हो गया न! खुद के दोष दिखाई दें और उन सभी के प्रतिक्रमण हों, तो बहुत हो गया!

और वास्तव में चारित्र किसे कहा जाता है कि सबकुछ खाता-पीता हो, लेकिन ज्ञाता-दृष्टा रहे वह सच्चा चारित्र। आत्मा खुद के स्वभाव में ज्ञाता-दृष्टा में आए वह वास्तविक चारित्र। उस चारित्र के बिना मोक्ष नहीं है।

शील व चारित्र के गुण

प्रश्नकर्ता : शीलवान में कौन से विशेष गुण होते हैं?

दादाश्री : शीलवान, वह ऐसे चारित्रवान की ओर जाता है। और सिर्फ चारित्रवान ही नहीं, अन्य बहुत से गुण भी इकट्ठे हो जाएँ, तब शीलवान कहलाता है।

इन चारों के पास ऐसी-ऐसी सिद्धियाँ होती हैं कि यदि तय करें कि आज मुझे इस जगह पर इस टाइम पर ही चोरी करनी है, तो उस टाइम पर एकज़ेक्ट हो जाती है। क्या वह सिद्धि कम कहलाएगी? उसमें भी नियम रखना।

सभी नियमों का पालन करने से सिद्धि उत्पन्न होती है (वह) शीलवान बनता है। इसलिए शीलवान के पास सभी लोग रेग्युलर रहते हैं। शीलवान का ऐसा सब प्रभाव और चारित्र वगैरह तो बहुत उच्च कोटि का होता है उनका!

सिर्फ ब्रह्मचर्य को ही चारित्र नहीं कहा जाता। चारित्र तो, जब शीलवान होता है, तब चारित्र कहलाता है। अत: शील का तो बहुत महात्म्य है। शील में ब्रह्मचर्य सहित इतने गुण होने चाहिए। यानी कि जिसकी वाणी से किसी को दु:ख नहीं हो, जिसके बर्ताव से किसी को किंचित्मात्र दु:ख नहीं हो, जिसका मन किसी के लिए बुरा नहीं सोचे, ऐसा होता है शीलवान।

चारित्रवान किसे कहते हैं? जो किसी को क्रोध से भी दु:ख नहीं पहुँचाता, किसी को लोभ से दु:ख नहीं पहुँचाता, मान को लेकर किसी का तिरस्कार नहीं करता, कपट से किसी को दु:ख नहीं देता, वह चारित्रवान कहलाता है। चारित्रवान की तो बहुत क़ीमत!

अंतर चारित्रवान और शीलवान में

प्रश्नकर्ता : चारित्रवान और शीलवान, इन दोनों में क्या अंतर है?

दादाश्री : शीलवान अर्थात् पूर्ण चारित्रवाला होता है। चारित्रवान यानी अंश शीलवान और शीलवान यानी सर्वांश शीलवान। यानी कि यह ज्ञान है तो आप में चारित्र आएगा, वर्ना तो चारित्र होता ही नहीं है न!

चारित्र और संयम में अंतर

प्रश्नकर्ता : दादा, चारित्र और संयम में क्या अंतर है?

दादाश्री : चारित्र और संयम में तो बहुत अंतर! चारित्र का मतलब तो किसी को किंचित्मात्र भी दु:ख नहीं हो, टकराव नहीं हो। और संयम तो, असंयम को रोकना, वह संयम कहलाता है। वह तो, यों व्यवहार में संयमी मनुष्य कहलाता है। लेकिन इस ज्ञान के बाद अब संयम आने लगा है। चारित्र को कुछ लेना-देना नहीं। चारित्रवान को देखकर लोग खुश हो जाते हैं।

शील और प्रज्ञा में अंतर

प्रश्नकर्ता : तो दूसरा प्रश्न यह होता है कि शील और प्रज्ञा, इन दोनों का क्या संबंध हैं?

दादाश्री : शील अलग है और प्रज्ञा अलग है।

प्रज्ञा वह आत्मा के प्रतिनिधि के रूप में काम करती है और शील वह अपना आचरण, जो मन का आचरण, वाणी का आचरण, देह का आचरण, तीनों का आचरण प्रकट करता है।

जहाँ जीतने की तैयारी, वहाँ चारित्रबल लूज़

कोई तुझे कुछ भी बोले, कुछ भी करे, तब भी उस घड़ी यदि तू मौन धारण कर ले और शांत भाव से देखा करे, तो तुझ में चारित्रबल उत्पन्न होता जाएगा और उसका प्रभाव पड़ेगा उस पर। लॉयर (वकील) हो फिर भी, वह यदि कैसा भी डाँटे, तो तू दादा का नाम लेना और स्थिर रहना। मन में ऐसा होगा कि ये कैसे हैं! यह तो हार ही नहीं रहे, फिर वह हार जाएगा। दादा जैसे सिखानेवाला मिलें तो फिर बाकी क्या रहा अब?

उसे जो जीतने की तैयारी करते हैं न, उससे चरित्रबल 'लूज़' (शिथिल) हो जाता है। हम ऐसी किसी प्रकार की तैयारी नहीं करते। चरित्र के उपयोग को आप तैयारी कहते हो, लेकिन उससे आप में जो चरित्रबल है वह 'लूज़' हो जाता है और अगर चरित्रबल खत्म हो जाएगा, तब वहाँ पर उनके सामने तेरी क़ीमत ही नहीं रहेगी।

बलवान चारित्र का टेस्ट

प्रश्नकर्ता : चारित्र बलवान हुआ कब कहलाता है? उसका टेस्ट क्या है?

दादाश्री : किसी से टकराव न हो, जब किसी भी जगह पर अपना मन टकराए ही नहीं, तब चारित्र बलवान हुआ, ऐसा कहलाता है। मन नहीं टकराए, बुद्धि नहीं टकराए, चित्त नहीं टकराए, अहंकार नहीं टकराए, शरीर नहीं टकराए, एडजस्ट एवरीव्हेर।

प्रश्नकर्ता : मन नहीं टकराए, बुद्धि नहीं टकराए वह ज़रा समझाइए न।

दादाश्री : किसी के साथ बखेड़ा (दखल) खड़ा न हो जाए, किसी से टकराव न हो, किसी का मुँह नहीं फूले अपनी वजह से। किसी को दुःख न हो, किसी को त्रास न हो, एवरीव्हेर एडजस्ट हो गया हो।

प्रश्नकर्ता : टकराव के बाद प्रतिक्रमण करे तो वह चारित्र ही कहलाएगा न?

दादाश्री : नहीं, वह तो चारित्र में आने की निशानी है।

अंश चारित्र, आत्मज्ञान के बाद

चारित्र तो मुख्य चीज़ है। लेकिन चारित्र मिलना बहुत मुश्किल है न! इस वर्ल्ड में कोई इन्सान ऐसा होगा, जिसमें थोड़ा सा भी चारित्र हो! एक सेन्ट भी चारित्र हो, ऐसा कोई इन्सान होगा क्या वास्तव में? इन शास्त्रकारों ने जिसे चारित्र कहा है न, वह चारित्र ही नहीं है, वह तो ज़रा भ्रांति हटी उसके एवज का चारित्र है। यर्थाथ चारित्र तो देखा नहीं है, सुना नहीं है। यह ज्ञान मिलने के बाद आप यर्थाथ चारित्र के एक अंश में बैठे हों और यह उसका स्वाद लग रहा है आपको, वह यर्थाथ चारित्र का अंश चखा। अंश का भी अंश, अभी तो अब धीरे, धीरे बढ़ेगा।

चारित्र का सुख वह कैसा बर्तता है!

ज्ञानीपुरुष से चारित्र ग्रहण करे, सिर्फ ग्रहण ही किया है, अभी तक पालन तो हुआ ही नहीं है, तब भी बहुत आनंद होने लगता है। तुझे आनंद हुआ क्या?

प्रश्नकर्ता : हुआ है न, दादा! उसी क्षण से अंदर पूरा खुलासा हो गया।

दादाश्री : लेते ही खुलासा हो गया न? लेते समय उसका मन क्लियर (साफ) चाहिए। उसका मन उस समय क्लियर था, मैंने जाँच लिया था। इसे चारित्र ग्रहण किया, कहा जाता है, व्यवहार चारित्र! और वह 'देखना' 'जानना' रखे, वह निश्चय चारित्र! चारित्र के सुख को जगत् समझा ही नहीं। चारित्र का सुख ही कुछ अलग है।

हम इस स्थूल चारित्र की बात कर रहे हैं। जैसे यह चारित्र उत्पन्न होता है, वह बहुत पुण्यशाली कहलाता है। ये सब लड़के कितने पुण्यशाली हैं! इन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत की आज्ञा ली थी, सो उन्हें आनंद भी कैसा रहता है!

प्रश्नकर्ता : ऐसा आनंद तो मैंने कभी भी देखा ही नहीं था। निरंतर आनंद रहता है!

दादाश्री : अभी इस काल में लोगों का चारित्र खत्म हो गया है। कहीं भी अच्छे संस्कार रहे ही नहीं है न! यह तो, यहाँ आ गए और यह ज्ञान मिल गया, इसलिए ठीक हो गया है। ये तो पुण्यशाली हैं, वर्ना कहीं के कहीं भटक गए होते। यदि इंसान का चारित्र बिगड़ जाए तो लाइफ यूज़लेस (ज़िंदगी निरर्थक) हो जाती है। दु:खी-दु:खी हो जाता है! वरीज़ (चिंता) वरीज़, वरीज़! रात को नींद में भी वरीज़! आपको तो बहुत आनंद रहता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, पहले तो जीने जैसा था ही नहीं।

दादाश्री : ब्रह्मचर्य की आज्ञा मिलने के बाद यदि कोई (विषय के) बम फेंकने आए, तो हमें सावधान हो जाना चाहिए। यह आज्ञा मिली है, यह तो बहुत ही बड़ी चीज़ है! इस आज्ञा के पीछे दादा की बहुत शक्ति खर्च होती है। यदि आपका निश्चय नहीं छूटे तो दादा की शक्ति आपको हेल्प करेगी और आपका निश्चय छूट गया, तो दादा की शक्ति खिसक जाएगी। ब्रह्मचर्य तो बहुत बड़ा खजाना है! लोग तो लूट जाते हैं। छोटे बच्चे को बेर देकर हाथ के कड़े निकाल ले, उसके जैसा है। बेर की लालच में बच्चा फँस जाता है और कड़े दे देता है, इस तरह जगत् लालच में फँसा है।

ब्रह्मचर्य व्रत लेने के बाद आनंद बहुत बढ़ गया है न? इस व्रत के न होने की वजह से ही यह सारा झंझट खड़ा हुआ है? इससे आत्मा के यर्थाथ स्वाद का पता नहीं चलता। महाव्रत का आनंद तो अलग ही है न! आनंद तो बाद में बहुत बढ़ता है, बेहद आनंद होता है!

चारित्र जगत् ने देखा नहीं है

चारित्ररूपी धन के अतिरिक्त अन्य कोई भी चीज़-वस्तु जन्मोंजन्म साथ आती ही नहीं।

ऐसा चारित्र जगत् ने देखा नहीं है, सुना नहीं है। शास्त्रों में कुछ लिखा गया है इस पर, लेकिन शब्दों में होता है। लेकिन शब्द तो स्थूल हैं और वाणी भी स्थूल है। उनमें चारित्र नहीं होता। चारित्र चीज़ ही अलग है न! एक सेकन्ड भी जिन्हें चारित्र रहे, वे भगवान कहलाते हैं।

इस काल में शीलवान ढूँढ़ना मुश्किल

प्रश्नकर्ता : दादा, इस ज़माने में कोई ऐसा शीलवान आपने देखा हो तो उदाहरण दीजिए।

दादाश्री : शीलवान, इस काल में तो ऐसा होता नहीं न! लगभग ऐसा कोई होता नहीं है। ऐसे शीलवान।

प्रश्नकर्ता : है, यह हमारे सामने ही हैं। (दादा को निर्देश करते हुए...)

दादाश्री : नहीं, वह तो सब अलग। वह तो शरीर की मालिकी नहीं है इसलिए शीलवान ही है न! शरीर की मालिकी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : और हम सभी को तो वैसा ही बनना है न?

दादाश्री : हाँ, ठीक है। लेकिन शीलवान ढूँढना मुश्किल है। वह तो बहुत बड़ी चीज़ है, वह शील तो बहुत ऊँची चीज़ है।

तीर्थंकर और शीलवान के द्रव्यभाव निर्मल

प्रश्नकर्ता : क्या इस जगत् में अभी ऐसा कोई शीलवान होगा, वास्तव मे?

दादाश्री : नहीं हो सकता। शीलवान तो होता होगा कोई? जहाँ शील के पर ही आघात किया है।

प्रश्नकर्ता : दादा ने ऐसा भी लिखा है कि दादा भी शीलवान नहीं है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन क्या हो सकता है? वे शीलवान कैसे हो सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : तो फिर हम कहाँ ढूँढें शीलवान को?

दादाश्री : ढूँढकर क्या करना है?

शीलवान किसे कहते हैं? वह बहुत ऊँचा पद है, जगत् के लोग मुझे शीलवान कहते हैं लेकिन मैं नहीं मानता न! कितना ऊँचा पद है, वह मैं जानता हूँ न, शीलवान!

हमारा व्यवहार कच्चा कहलाता है। शीलवान के व्यवहार और हमारा व्यवहार में अंतर है। हमारा निश्चय पूरी तरह से शीलवान होता है, लेकिन व्यवहार कच्चा। हमारा व्यवहार पूर्वकर्म पर आधारित होता है।

प्रश्नकर्ता : हम तो यहाँ, व्यवहार की भाषा में जो ब्रह्मचर्य का पालन कर रहा हो, उसे शीलवान कहते हैं।

दादाश्री : अभी आपको कोई कहे, घर ले जाइए। तो रास्ते में होटल की चाय नहीं पीता, लेकिन दूध तो पीता ही है न। ऐसा सब नहीं होना चाहिए। यह सब हमारा पिछला बिगाड़, पूर्वकर्म का। भाव से आज हमारे मन में कुछ भी नहीं है, लेकिन पिछला बिगाड़ हमें दिखाई देता है न! अभी यदि भूख लगी हो न, तो बाहर से यदि पकौड़ें लाकर दे न तो भी खा लेंगे। नहीं हो सकता वह शीलवान! यह तो कलियुग का मामला, दुषमकाल का मामला। इसमें ऐसा ही होता है, ऐसा ही रहता है। भाव से (हम) बहुत शीलवान हैं, लेकिन द्रव्य पूर्वकर्म के आधीन है सभी और इस देश-काल के आधीन है।

प्रश्नकर्ता : काल की अपेक्षा से केवळी शीलवान होते हैं क्या?

दादाश्री : केवळी भी नहीं कहे जा सकते।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् तीर्थंकर ही शीलवान होते हैं।

दादाश्री : (उन्हें) द्रव्य, भाव दोनों निर्मल। भाव से तो हम भी शीलवान हैं। केवळी भी होते हैं। लेकिन तीर्थंकरों के द्रव्य व भाव दोनों निर्मल। वह आभा अलग ही होती है, उनकी वाणी कैसी मिठासवाली!

ज्ञानी नहीं बेचते शील कभी

जो लोगे वह (दूसरा) बेचकर लोगे, खुमारी बेचकर प्राप्त करोगे। इसीलिए हम बिकने नहीं देते। हम हमारा शील बेचते नहीं हैं, उसी वजह से शील इकट्ठा हो रहा है न! हमने बचपन से बेचा नहीं, प्रदान ज़रूर किया था, पाँच सौ मैं उसे देता ज़रूर था।

प्रश्नकर्ता : ऐसा हमने मुंबई में देखा था, दादा। वे शाल देने आए थे न, बहुत ज़बरदस्ती से ....बहुत प्रेम से, तो फिर ऐसा कहा था कि...

दादाश्री : उसे कहा कि बैग में जगह नहीं है, भाई। इसलिए यह आपका मैं पहन लेता हूँ, और इसके बदले मेरा जो दूसरा है वह आप लेकर जाइए। मेरा पहना हुआ है न, वह आप लेकर जाइए। अर्थात् बैग में जगह ही नहीं है न! इसलिए प्रसादी लेते जाइए।

वहाँ बहुत ज़्यादा जागृति रखनी पड़ती है, वर्ना वहाँ पर मार खा गए तो जब बहुत बड़ी मार पड़ जाती है। तब उसका आत्मा का बिगड़ जाता है और अपने पुद्गल का बिगड़ता है। अपना बिका मतलब पुद्गल का बिक जाता है। थोड़ा बहुत आत्मा का भी बिक जाता है।

प्रश्नकर्ता : कुछ भी नहीं लेते वही सब से बड़ी चीज़ है, दादा।

दादाश्री : मना करना, वह तो बहुत बड़ा दोष है। उसे उसका भाव उत्पन्न हुआ, एक तो भाव उत्पन्न करने के लिए तो कितने ही जन्मों की ज़रूरत है, तब जाकर कहीं भाव उत्पन्न हुआ होता है बेचारे को, और हम चूर-चूर कर दें! वह सब अलग हुआ। वही समझना है न! हमें क्या चाहिए? कुछ चाहिए ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह क्या है? हमें ऐसा लगता है कि हम उसके भाव को सँभाल लें, ऐसा करने से फिर अपना मन ढीला पड़ जाता है।

दादाश्री : ढीला पड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए फिर भेदरेखा का पता नहीं लगता, कहाँ भेद रखना?

दादाश्री : फिर डूब जाते हैं, कीचड़ में।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाली व्यक्ति प्रेम से दे रहा है, हमें लेना नहीं है। फिर भी फूल की पंखुड़ी जितना लें, तो उतना शील बिकता तो है न?

दादाश्री : वह बिकता ही है। उसे बेचे बगैर कोई चारा ही नहीं है न वहाँ पर।

प्रश्नकर्ता : अत: अलाऊ करना पड़ता है।

दादाश्री : और कोई चारा ही नहीं है। यदि वह बेचेंगे नहीं तो उसका प्रतिभाव उलटा पड़ जाएगा। उसके भाव को कुचल डालें न, तो और भी ज़्यादा शील बिक जाएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा क्या? यदि ऐसा भाव हो जाए तो क्या ज़्यादा शील बिक जाता है?

दादाश्री : बहुत ज़बरदस्त बिक जाता है, उसके भाव तो खंडित करना ही नहीं चाहिए, वास्तव में तो, मैं वहाँ पर बहला-फुसलाकर ही काम करता हूँ न! किसी को *तरछोड़* (तिरस्कार सहित दुत्कारना) नहीं लगाता।

शील को कहा, भगवान चारित्र

प्रश्नकर्ता : यह शील बिक जाए तो क्या बिक जाता है? अभी तक तो ऐसा ही लगता था कि यह फ्री ऑफ कॉस्ट आता है न!

दादाश्री : हमसे जो उसका हित होता है न, उससे हमें ज़बरदस्त कमाई होती है। उसका हित होता है, उसे नुकसान नहीं होता और हमें कमाई होती है। लेकिन यदि हम उसका बदला लें, तो उसे लाभ नहीं होगा, हमें नुकसान होता है। शील अर्थात् इस जगत् का सबसे बड़ा और ज़बरदस्त चारित्र। अत: आत्म चारित्र को लानेवाला भी शील है। शील वह अंतिम चारित्र, भगवान चारित्र, भगवान बनानेवाला शील, उसे शीलवान कहते हैं।

शील पथ, बात छोटी और सीधी

प्रश्नकर्ता : ब्रह्मचर्य पुस्तक का एक्ज़ेक्ट आराधन करे, तो फिर संपूर्ण शीलवान बन सकता है न?

दादाश्री : क्यों नहीं हो पाएगा? जिन्हें ज्ञान दिया है उन्हें हो सकता है, औरों को नहीं हो सकता। दूसरा तो थोड़ा-थोड़ा प्रोग्रेस कर सकता है। ज्ञानवालें को तो पूर्ण चरित्र! शीलवान पसंद है न?

प्रश्नकर्ता : शीलवान पसंद है। लेकिन हमारे से चूक हो जाती है। मुझ से भी टकराव हो जाता है।

दादाश्री : हम जो कहते हैं न, वह तो सार कहलाता है कि जिस क्षेत्र में जाना है उस क्षेत्र की बात है। शीलवान तो तीर्थंकर को कहते हैं। और शीलवान होना है वह तो फिर जितना हो सका उतना सही। और जो कमी है उसे जानना चाहिए, कि कितनी कमी रह गई है!

प्रश्नकर्ता : हमें और कुछ लंबा जानने की ज़रूरत नहीं है और किसी को भी किंचित्मात्र दु:ख न हो उस तरह से रहना। तो उसमें सब आ गया!

दादाश्री : सब आ गया, छोटी और सीधी बात।

आपके सभी दु:ख मुझे सौंप दो

प्रश्नकर्ता : औरों को सुख देना और हमें भी सुख में रहना, शांति से रहना, ऐसा ठीक है न?

दादाश्री : और यदि हम नहीं रह पाएँ तो क्या अन्य को सुख देना बंद कर देना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : वह तो आपने बताया न कि सामने...

दादाश्री : ऐसा रहना चाहिए कि पूरा जगत् हमें दु:ख दे, लेकिन हम आपको सुख देंगे, ऐसा ध्येय रखना।

पूरा जगत् मुझे दु:ख दे... हमने तो क्या कहा है, अमरिका में, उन सभी से कहा है कि आपके सभी दु:ख मुझे सौंप जाओ, आपका सुख आपके पास रहने दो। क्योंकि यदि आप उसे फिर से याद नहीं करोगे तो। आपको वह दु:ख नहीं रहेगा। याद करो तो वापस आ जाएगा। आपकी कमज़ोरी ही आपको परेशान करती है।

शील के प्रताप से निरालंब पद

मैं इन्डिपेन्डन्ट (स्वाधीन) हो गया हूँ। भगवान भी मेरा *ऊपरी* (मालिक, बॉस) नहीं है, वर्ल्ड में कोई *ऊपरी* नहीं है और फिर लघुत्तम हूँ, तुझ से छोटा हूँ।

प्रश्नकर्ता : दादा, इन्डिपेन्डन्ट होना इसका क्या मतलब है? कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : हं, क्या लोग बड़ों को इन्डिपेन्डन्ट होने देते हैं? दखल करके रख देते हैं जबकि ये तो कैसी भी दखल करनेवाले से कहेंगे आप नालायक हो, बदमाश हो, लेकिन आखिर में छूता नहीं है न? मैं तो छोटे से भी छोटा, यानी उससे भी छोटा हूँ। अरे भाई, तू गालियाँ दे रहा है, भाई तेरी गाली असर ही नहीं करतीं। इसलिए लघुत्तम पुरुष हूँ। और इन्डिपेन्डन्ट हो गया हूँ। वह वास्तविक्ता है। वह भी सौ प्रतिशत। कोई *ऊपरी* नहीं है वर्ल्ड में। और यदि भगवान कुछ कर रहे होते तो वे भगवान तो मुझे वश हो चुके हैं।

विषय विकार संबंधी एक भी विचार नहीं आया है कभी भी। लक्ष्मी का कभी भी विचार नहीं आया है। किसी चीज़ की भीख नहीं है। किसी भी चीज़ की इच्छा नहीं है इस वर्ल्ड में। फिर भगवान वश हो जाएँगे या नहीं होंगे? तू यदि इतना करे तो हो सकता है, सरल ही है। यह तो सारा इन्डिपेन्डपना, जिसे निरालंब कहा जाता है। ये सभी, पूरा जगत् *हूँफ* (सहारा) ढूँढता है। उसका क्या कारण है? अवलंबन। *हूँफ* टूट जाए तो रोता है बेचारा। इसीलिए निरालंबपना हो सकता है, अपने साइन्स के आधार पर। अपने विज्ञान के आधार पर निरालंब हो सकता है। जिसे होना हो वह आ जाना मेरे पास। वर्ना, अगर नहीं होना हो तो, और कुछ होना हो तो भी आ जाना। जो भी कुछ चाहिए तो आ जाना मेरे पास। दिस इज़ द केश बैंक ऑफ डिवाइन सोल्यूशन (इस दिव्य समाधान के नकद बैंक है)।

जितना शील उतना परिवर्तन।

प्रश्नकर्ता : आपका शील देखकर भी जगत् का परिवर्तन हो जाएगा न?

दादाश्री : जगत् जीतने के लिए एक ही चाबी बताता हूँ कि, 'यदि विषय, विषयरूप नहीं बनें तो पूरा जगत् जीत जाएगा।' क्योंकि उसके बाद वह व्यक्ति शीलवान माना जाएगा। फिर जगत् का परिवर्तन कर सकेगा। आपका शील देखकर ही सामनेवाले में परिवर्तन होता है। वर्ना किसी में परिवर्तन होगा ही नहीं। बल्कि विपरीत होगा। अभी तो सारा शील ही खत्म हो गया है न!

प्रश्नकर्ता : जो पहले चरित्रहीन हो, क्या वह शीलवान बन सकता है?

दादाश्री : हाँ, क्यों नहीं? एक बार दिवालिया हो गया हो, और फिर जब से वह कर्ज़ चुका दिया, तो फिर कर्ज़ा गया और बाद में वह साहुकार भी बन सकता है न! जब तक जीवित है, तब तक बन सकता है, जितनी मुद्दत हो उतनी, लेकिन एकदम से शीलवान नहीं बन सकता।

प्रश्नकर्ता : बुरे कामों का कर्ज़ कैसे चुक पाएगा?

दादाश्री : वह कर्ज़ तो चढ़ गया है। लेकिन अब नये सिरे से सब इंतज़ाम कर रहा है न?

प्रश्नकर्ता : पश्चाताप से हो सकता है।

दादाश्री : और नये सिरे से इंतज़ाम कर देगा न!

टूटे कपट मन के विरोधी बनने से

अब आप यदि विषय की (विरोध की) लाइन पर बोलना शुरू कर दो, तो यदि आपकी वह (विषय) लाइन होगी तो भी टूट जाएगी। क्योंकि आप मन के विरोधी बन गए। मन की वोटिंग अलग और आपकी वोटिंग अलग हो गई। मन समझ जाता है कि, 'ये तो हमारे विरोधी हो गए। अब मेरा वोट नहीं चलेगा।' लेकिन भीतर कपट है, इसलिए लोग नहीं बोलते, और ऐसे बोलना उतना आसान भी नहीं है न! पब्लिक को यदि सही सिखाया जाए तो पब्लिक तो सबकुछ समझ जाए ऐसी है, क्योंकि भीतर आत्मा है न! इसलिए देर नहीं लगती। लेकिन कोई कहता नहीं है न! लेकिन वह कहे कैसे? क्योंकि उनके भीतर भी पोल रहती है न! मैं बीड़ी पीऊँ और आपसे ऐसा कहूँ कि बीड़ी नहीं पीनी चाहिए तो मेरा प्रभाव कैसे पड़ेगा? अगर मेरा बिल्कुल स्ट्रोंग (मज़बूत) होगा, साफ होगा तभी मेरा प्रभाव पड़ेगा।

शीलवान बनने की शुरुआत, मॉरल भावना से

प्रश्नकर्ता : दादा, शीलवान बनने की शुरूआत कहाँ से करूँ?

दादाश्री : अभी, हन्ड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत) शीलवान नहीं होते, वैसे शीलवान इन अंतिम पच्चीस सौ साल से हैं नहीं। आखिरी पच्चीस सौ साल के जो कर्म हैं, उस वजह से शीलवान हो ही सकते नहीं। शील आ ज़रूर सकता है लेकिन हन्ड्रेड परसेन्ट पूर्णता नहीं आ सकती।

वे इस मॉरैलिटी पर से समझ जाते हैं कि मैं इममॉरैल हूँ। ऐसा कुछ उसे पता चले, तो मॉरैल बनने का प्रयत्न करेगा वह। वह भावना करेगा। भावना से इममॉरैल हो गया है और भावना से वापस मॉरैल हो सकता है, वह। इममॉरैल हो गया, वह उसका दोष नहीं है लेकिन अब तू भावना कर के मॉरैल बनना है। ऐसी भावना करने में, वह तेरा पुरुषार्थ है। दोष होने के बावजूद भी तेरा पुरुषार्थ है वह, ऐसा हम कहना चाहते हैं। इममॉरैल तो परिणाम हैं, लेकिन भावना मॉरैल है तेरी इसलिए। वापस परीक्षा तू उच्च प्रकार की देने लगा। यह तो पहले की दी हुई परीक्षा का रिज़ल्ट आया है।

प्रश्नकर्ता : मॉरैलिटी व सिन्सियरिटी यानी क्या?

दादाश्री : 'मॉरैलिटी' यानी क्या? खुद के हक़ का और सहजरूप से मिल जाए वो सारा ही भोगने की छूट। वह है मॉरैलिटी। खुद के हक़ का सहजरूप से नहीं मिले और माँगकर लेना हो तो नहीं। खुद के हक़ का, खुद का फिर भी माँगकर लेना पड़े तो नहीं। सहजरूप से मिल जाए, वही चाहिए। और 'सिन्सियरिटी' यानी खुद, अपने आप के प्रति सिन्सियर रहे, वह सभी के प्रति सिन्सियर रह सकता है। मन के प्रति सिन्सियर रहे, बुद्धि के प्रति सिन्सियर, अहंकार के प्रति सिन्सियर रहे, सभी के प्रति सिन्सियर रहे, उसमें छल-कपट नहीं करे। सामनेवाला इनसिन्सयर हो जाए फिर भी वह खुद का सिन्सियरपना नहीं जाए, तो वह सिन्सियरिटी कहलाए।

बुद्धि से नहीं बल्कि ज्ञान से प्राप्त होगा वह पद

प्रश्नकर्ता : लेकिन शील की दिशा में तो जा सकते हैं न? उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : इस जगत् में कोई दोषित है ही नहीं। वास्तव में, हर एक जीव निर्दोष ही है, जगत् में। दोषित दिखते हैं, वही भ्रांति है। 'कोई दोषित नहीं है,' वह 'उसके' लक्ष में रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसे बुद्धि से समझना बहुत मुश्किल (कठिन) है।

दादाश्री : बुद्धि इसे समझने ही नहीं देगी। कोई दोषित नहीं है, वह बुद्धि समझने ही नहीं देगी।

प्रश्नकर्ता : तो उसके लिए क्या करना चाहिए।

दादाश्री : यह वाक्य यदि आपके अनुभव में आए, तो अनुभव ही आपको बता देगा। पहले यह वाक्य की शुरूआत करो। तब फिर वह अनुभव आपको बता देगा तब फिर बुद्धि शांत हो जाएगी।

छोटा वाक्य से काम लेना कि किसी दुश्मन के प्रति भाव भी न बिगड़े और यदि बिगड़ गया हो, तो प्रतिक्रमण से सुधार लेना। बिगड़ जाना, वह चीज़ कमज़ोरी की वजह से बिगड़ जाती है। तो प्रतिक्रमण से सुधार लो उसे! ऐसे होते होते वह चीज़ सिद्ध हो जाएगी।

आज्ञा से सिद्ध होती है शीलवान दशा

प्रश्नकर्ता : दादा लेकिन, यह भावना, यानी उसमें भी प्रयत्न करने का तो आया ही न कुछ?

दादाश्री : जो माल है, वह उसका *निकाल* (निपटारा) करना है। *निकाल* किया यानी शुद्ध ही है। लेकिन जिन्हें ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ हो उसके लिए कुछ रास्ता चाहिए न? उसी के लिए ये सारी बातें हैं, मॉरैलिटी की। हमारे लिए तो प्रश्न ही खड़ा नहीं होता। हमारे लिए तो इन पाँच आज्ञा की वजह से कोई प्रश्न ही खड़ा नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमें जो यह पुरुषार्थ करना है, वह कैसा पुरुषार्थ है?

दादाश्री : ये पाँच आज्ञा, यही पुरुषार्थ है।

प्रश्नकर्ता : उसे ध्यान में रखकर उस हिसाब से आचरण में लाना।

दादाश्री : पाँच आज्ञा का ही पालन करना, वही पुरुषार्थ है और पाँच आज्ञा के परिणाम स्वरूप क्या होता है? ज्ञाता-दृष्टा रह पाते हैं और वही है यर्थाथ पुरुषार्थ।

प्राप्ति 'ग़रज़' से ही

प्रश्नकर्ता : शील वह अभ्यास का विषय है।

दादाश्री : अभ्यास से बहुत हुआ तो 'सी.ए.' बन सकता है, शीलवान नहीं बन सकता। जिनमें ये सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी गुण दिखें, वहाँ बैठने से शील प्राप्त हो पाता है। उनके संग में-संसर्ग में बैठने से यह शील उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् उसे बार बार उस वातावरण में आने की आदत डालनी चाहिए?

दादाश्री : उसकी उसे ग़रज़ रखनी पड़ेगी, आदी नहीं होना। ग़रज़ हो न, तो आदत डालने की ज़रूरत नहीं है। जिसे भूख लगी हो, तो वह होटल का बोर्ड नहीं देखता। बेकार होटल हो, फिर भी कोई बात नहीं, घुस जाएगा। जिसे भूख लगी हो, वह क्या कुछ देखेगा?

वर्ना शील तो, शीलवान को देखकर उनके पास बैठे ग़रज़ से, तो प्राप्त हो पाता है। लेकिन यह आदत की बात वापस कहाँ से लेकर आए यहाँ पर?

और अभ्यास तो कब हो सकता है? जिसे ग़रज़ हो तो। जिनकी ग़रज़ जगे न, वह अभ्यास तो अपने आप ही होता रहता है। ग़रज़ को जानना चाहिए। जिसे ग़रज़ होगी वह तो वैसा हो ही जाएगा या नहीं? विवाह

करने की ग़रज़ जगी हो, तो उसे अभ्यास करना पड़ता है? इसलिए ग़रज़ है तो कभी न कभी भी वह सिद्धि प्राप्त किए बिना रहता ही नहीं। बाकी लोगों को तो ग़रज़ है ही नहीं। और वह तो संयोगानुसार बदल जाता है। बदल जाए तो कुछ भी नहीं, क्योंकि शीलवान होते-होते तो कितने टेस्ट एक्ज़ामिनेशन (परीक्षा) आते हैं। वहाँ मनुष्य बदल नहीं जाए, ऐसा होता नहीं है न!

इसलिए ये लोग 'त्याग करो, तप करो' कहते हैं। अरे, 'करो' तो बोला जाता होगा, किसी व्यक्ति को? करवा-करवाकर तो मार डाला है लोगों को। आप ऐसी ग़रज़ डाल दो कि वह अपने आप करे। 'अभ्यास करो, फलाना करो' तो 'किस तरह अभ्यास करूँ? आप वहाँ बैठे, मैं यहाँ बैठा हूँ किस तरह अभ्यास करूँ?' अत: ऐसी कुछ ग़रज़ डाल दो उनमें। ग़रज़ डाल दे तो फिर चलने लगेगा या नहीं चलने लगेंगे?

प्रतिसाद मॉरेल बाइन्डिंग का!

प्रश्नकर्ता : दादा, ज्ञानी की वाणी मृत को भी जीवित कर दे, वह यही है न?

दादाश्री : हाँ, जीवित कर दे! हम कहें कि यह ऐसा है, यों चार ही वाक्य बोलें न, तो उसी में झनझनाहट आती है। वह शीघ्रता से चढ़ जाए। अंधा देखने लगता है। यानी कि झूठ नहीं कहा है इन सभी ने। 'ज्ञानी' की वाणी में चेतनबल है। वह चेतनबल किस पर आधारित है? क्योंकि वह वाणी चेतन को स्पर्श करके निकलती है। और वह वाणी कैसी है? मॉरेल बाइन्डिंगवाली है।

हम एक सेकन्ड के लिए भी इस शरीर में नहीं रहते, उसी का यह फल है सारा। और हिन्दुस्तान की दशा तो कुछ और ही होनेवाली है। पूरी तरह से बदलाव हो जाएगा। अभी तो लाखों लोग, करोड़ों लोग पाप्ति करेंगे, पूरी दुनिया प्राप्ति करेगी!

अब आपका यह पूर्ण हुआ कब माना जाएगा?

अब आपका यह पूर्ण हुआ, ऐसा कब माना जाएगा? जब आपको देखकर सामनेवाले को समाधि महसूस हो, आपको देखकर सामनेवाला दु:ख भूल जाए, तब पूर्ण हुआ माना जाएगा! आपका हास्य ऐसा दिखाई दे, आपका आनंद ऐसा दिखाई दे कि सभी को हास्य उत्पन्न हो, तब समझना कि खुद के सारे दु:ख गए!

आप सभी को अभी टेन्शन रहता है और वह 'टेन्शन' भी हमारी आज्ञा में नहीं रहने के कारण है। आज्ञा तो इतनी सुंदर और बहुत आसान है। लेकिन अब जो कुछ भुगतने का हो, उससे बच नहीं सकते न! और उसमें हम से हस्तक्षेप नहीं हो सकता न! लेकिन कभी न कभी इसमें से बाहर निकल जाओगे। क्योंकि जब यर्थाथ रास्ता मिल जाए, उसके बाद कोई व्यक्ति मार्ग नहीं चूकेगा न?

यदि एक ही मनुष्य प्योर हो तो कितने ही मनुष्यों का काम हो जाए! अत: खुद की प्योरिटी चाहिए। आप चाहे संसारी हो या त्यागी हो, भगवान को कुछ लेना-देना नहीं है, वहाँ तो प्योरिटी चाहिए। इम्प्योर गोल्ड वहाँ काम नहीं आएगा। भगवा हो या सफेद हो, लेकिन जब तक इम्प्योर होगा, तब तक काम नहीं आएगा। आपका प्रभाव ही नहीं पड़ेगा न! शीलवान बनना चाहिए।

होगा जग कल्याण शीलवान के निमित्त से

आत्मा मोक्ष स्वरूप है। जब से वह (खुद को) रियलाइज़ हुआ, तभी से मोक्ष स्वरूप है। लेकिन पहले शीलवान बनना पड़ेगा। उसके गुण उत्पन्न होने चाहिए। शीलवान यानी (उसे) हमेशा सुख होता है और खुद को देखते ही अन्य लोगों में बदलाव आ जाए। उतनी ही ज़रूरत है हमें। वर्ना उपदेश देने से तो बदलाव होता नहीं। खुद शीलवान हुआ कि उसके बाद जगत् में सभी उसके निमित्त से बदल जाएँगे।

- जय सच्चिदानंद

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

२०-२४ नवम्बर : इस साल बच्चों और युवकों को पूज्यश्री के सत्संग का लाभ अधिकतर मिले इस हेतु पूज्यश्री जहाँ जाए, वहाँ के MHT के सेन्टर पर भी पूज्यश्री का एक दिन का सत्संग आयोजित होता था। जिसकी शुरूआत बड़ौदा से हुई, जहाँ पर ४०० जितने बच्चों और युवकों ने नृत्य, जोक्स, नाटक वगैरह जैसे कार्यक्रम किए। जिसमें एक ग्रुप ने डिप्रेशन, इर्षा, बुराई के सामने कैसे ज्ञान से जागृति रखे, ऐसे सब्जेक्ट्स पर बिना बोले सिर्फ (म्यूट) ऐक्टिंग करके सुंदर ड्रामा पेश किया। ६० जितने बच्चों और युवकों को अपने खुद के प्रश्न पूज्यश्री को पूछने का मौका मिला। बड़ौदा के माजलपुर में पूज्यश्री का सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम रखा गया। जिसमें ८२५ मुमुक्षुओंने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

२६-२७ नवम्बर : सांवरकुंडला में दूसरी बार पूज्यश्री का सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम रखा गया। जहाँ पर १००० मुमुक्षुओंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पहले ज्ञान लिए हुए महात्मा भी उपस्थित रहे। स्थानीय महात्माओं के लिए विशेष सत्संग और दर्शन का कार्यक्रम रखा गया।

२९ नवम्बर से २ दिसम्बर : भावनगर आयोजित सत्संग और ज्ञानविधि कार्यक्रम में १००० मुमुक्षुओंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। यहाँ पर २ दिसम्बर को पूज्य नीरू माँ का ७०वाँ जन्मदिन भारी उत्साह के साथ मनाया गया। GNC के विशेष कार्यक्रम दौरान LMHT के और YMHT के बच्चों और युवकोंने नीरू माँ के पद पर नृत्य, पूज्य नीरू माँ पर कविता और नीरू माँ की मीठी यादें प्रस्तुत की।

सीमंधर सिटी के महात्माओंने पूज्य नीरू माँ के जन्मदिन पर प्रभातफेरी, समाधि पर प्रार्थना-आरती तथा भक्ति वगैरह सब किया। पूज्य नीरू माँ के सत्संग की विशेष सी.डी. बताई गई।

८-९ दिसम्बर : आणंद में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम में ८१० मुमुक्षुओंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। अक्षर फार्म हाउस में रखे गए कार्यक्रम दौरान स्वामीनारायण मंदिर के कोठारी स्वामीने पूज्यश्री का अभिवादन किया। सेवार्थियों के लिए पूज्यश्री के विशेष सत्संग-दर्शन का कार्यक्रम तथा आप्तपूत्र द्वारा MMHT सत्संग और फोलोअप सत्संग रखा गया।

११-१५ दिसम्बर : सुरत में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान २१०० मुमुक्षुओंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। GNC के MHT ग्रुप के विशेष आयोजित कार्यक्रम में २५० जितने बच्चों और युवकों ने नृत्य, नाटक और भक्ति द्वारा खुद का कौशल दिखाया। महात्माओं के लिए पूज्यश्री का विशेष सत्संग आयोजित हुआ।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर सोम से शनि - रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
- **'डीडी-पटना'** पर सोम से शुक्र शाम ६-३० से ७ (हिन्दी में) **(नया कार्यक्रम)**
- **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० ज्ञानवाणी (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA - 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

UK - **'विनस'** (डीश टीवी चेनल 805-युके) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'साधना'** पर हर रोज़ - **सुबह ७-४० से ८-१० और शाम ७-१० से ७-४०** (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन-नेशनल'** पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में)
- **'डीडी-गिरनार'** और गुजरात में **'दूरदर्शन'** पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'डीडी-गिरनार'** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'डीडी-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में) **(समय में परिवर्तन)**

USA - 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST (गुजराती में)

USA-UK - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

इंदौर **दि.** : 25 जनवरी, शाम 6 से 8 तथा 26 जनवरी दोपरहर 3 से 6-30 **संपर्क :**9893545351
स्थल : ६३, कैलास मार्ग (पुराना धाधु भवन), डो. किशोर मीत्तल के पास, अंतिम चौराहे के पास.

भोपाल **दिनांक** : 8 फरवरी, **समय :** सुबह 11 से 6 **संपर्क :** 9425024405
स्थल : सत्संग सेन्टर, जनक विहार कोम्प्लेक्ष, एयरटेल ओफिस के सामने, मालविया नगर.

जबलपुर **दिनांक** : 9 फरवरी, **समय और स्थल की जानकारी के लिए** **संपर्क :** 9425160428

अमरावती **दिनांक** : 10 फरवरी, **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9422915064
स्थल : दोशी वाडी, गुलशन मार्केट के पास, जयस्तंभ चौक.

अमरावती **दिनांक** : 11 फरवरी, **समय :** सुबह 11 से 1, शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9422915064
स्थल : मोटो कम्पाउन्ड, विदर्भ टायर के पास, मोर्शी रोड.

जलगाँव **दिनांक** : 12 फरवरी, **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9420942944
स्थल : ओमकार लोन, डी.एस.पी. चौक, एच.डी.एफ.सी. बैंक के सामने.

औरंगाबाद **दिनांक** : 13 फरवरी, **समय :** शाम 5-30 से 8-30 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : निमिषा बंगलो, पेंडकर होस्पिटल के सामने, ज्युबिली पार्क चौक.

औरंगाबाद **दिनांक** : 14 फरवरी, **समय :** शाम 5 से 8 **संपर्क :** 8308008897
स्थल : शास्त्री नगर होल, हेडगेवर होस्पिटल के पीछे, गजानन मंदिर.

पूणे **दिनांक** : 15 फरवरी, **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9422660497
स्थल : होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर कोर्नर के पास, मार्केट यार्ड, पूणे.

पूणे **दिनांक** : 16 फरवरी सुबह 10-30 से 12-30 तथा दोपहर 3-30 से 5 **संपर्क :** 9422660497
स्थल : होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर कोर्नर के पास, मार्केट यार्ड, पूणे.

दिल्ली **दिनांक** : 16 फरवरी, **समय :** सुबह 10 से शाम 4 **संपर्क :** 9810098564
स्थल : लौरेल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के सामने, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा.

कुरुक्षेत्र **दिनांक** : 17 फरवरी, **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9671868450
स्थल : भगवान परशुराम कालेज, सेक्टर-5, मेईन मार्केट, हुडा, कुरुक्षेत्र.

चंदीगढ **दिनांक** : 20 फरवरी, **समय :** शाम 6-30 से 8-30 **संपर्क :** 9872188973
स्थल : सनातन धर्म मंदिर होल, सेक्टर 32-डी.

चंदीगढ **दिनांक** : 21-23 फरवरी, **समय और स्थल के लिए संपर्क :** 9872188973 / 8427413624

दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिरः (079) 39830100, **अहमदाबादः** (079) 27540408, **वडोदरा : (दादा मंदिर)** 9924343335, **राजकोट त्रिमंदिरः** 9274111393, **भूज त्रिमंदिरः** (02832) 290123, **गोधरा त्रिमंदिरः** (02672) 262300, **मुंबईः** 9323528901, **दिल्लीः** 9310022350, **बैंगलूरः** 9590979099, **कोलकताः** 033-32933885, **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडाः** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलियाः** +61 421127947, **केन्याः** +254 722722063

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अहमदाबाद

२४-२५ जनवरी (शुक्र-शनि) -शाम ६ -३० से ९ **सत्संग** तथा **२६ जनवरी** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : अहमदाबाद एज्युकेशन सोसायटी ग्राउन्ड, विजय चार रस्ता, अमुल पार्लर के सामने, नवरंगपुरा :9428330377

अमरेली त्रिमंदिर - भूमि पूजन

६ फरवरी (गुरु) -सुबह १० -३० से १२ - **त्रिमंदिर भूमि पूजन**
स्थल : लीलीया रोड बायपास चोकडी, अमरेली. **संपर्क :** 9426985638

राजकोट

७-८ फरवरी (शुक्र-शनि) -शाम ७ -३० से १० **सत्संग** तथा **९ फरवरी** (रवि), शाम ६-३० से १० - **ज्ञानविधि**
स्थल : श्री रणछोडदासजी बापु आश्रम ग्राउन्ड, अलका सोसाइटी मेइन रोड, कुवाडवा रोड. **संपर्क :** 9879137971

मोरबी

१२ फरवरी (बुध) -शाम ८ -३० से ११ **सत्संग** तथा **१३ फरवरी** (गुरु), शाम ७-३० से ११ - **ज्ञानविधि**
स्थल : समय गेट के पास, विनायक होल के सामने, शनाला रोड, मोरबी. **संपर्क :** 9909172755

भुज

१५ फरवरी (शनि) -शाम ६-३० से ९ **सत्संग** तथा **१६ फरवरी** (रवि), शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : ज्युबिली ग्राउन्ड, भुज. **संपर्क :** 7567561556

चंदीगढ़

८ मार्च (शनि) -शाम ६ से ८-३० **सत्संग** तथा **९ मार्च** (रवि), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : टागोर थीयेटर, सेक्टर-18, सरकारी मोडेल हाइ स्कूल के सामने, चंदीगढ़. **संपर्क:** 8427413624

सुरेन्द्रनगर

१४ मार्च (शुक्र) - शाम ४-३० से ७ - **सत्संग** तथा **१५ मार्च** (शनि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**
स्थल : त्रिमंदिर, सुरेन्द्रनगर-राजकोट हाई-वे, लोक विद्यालय के पास, मुली रोड. **संपर्क :** 9879741582

सुरेन्द्रनगर त्रिमंदिर का प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

दि. १६ मार्च २०१४ (रविवार)

प्राणप्रतिष्ठा : सुबह ९-३० से १, **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती :** शाम ४ से ७, **भक्ति :** रात ९ से १०

स्थल : त्रिमंदिर, सुरेन्द्रनगर-राजकोट हाई-वे, लोक विद्यालय के पास, मुली रोड. **संपर्क :** 9879741582

विशेष सूचना :

१) प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।
२) कार्यक्रम में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है ।

अडालज त्रिमंदिर

दि. **१९ मार्च** (बुध), सुबह १० से १२ - **पू. नीरू माँ की स्पे. सीडी** तथा **अन्य कार्यक्रम**

शाम ४-३० से ६-३० - **आप्तसिंचन के नए साधकों की समर्पण विधि**

रात ८-३० से १० - **पू. नीरू माँ की आठवी पुण्यतिथि पर विशेष भक्ति**

जनवरी 2014
वर्ष - ९, अंक - ३
अखंड क्रमांक - ९९

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to-30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

जगत में उत्तम पद, शीलवान का...

ब्रह्मचर्य पर हिन्दुस्तान में ऐसा किसी ने कहा नहीं है अभी तक। लोगों को इसी में (विषय में) ही स्वाद आता है। जहाँ अनेक तरह के झगड़े, विग्रह और संघर्ष पैदा होते हैं, वहीं पर ये जीव फँसते हैं। यह फँसाव छूटता नहीं है और अनंत जन्म लेने पड़ते हैं। क्योंकि बाद में फिर बैर वसूल करते ही रहते हैं। यदि ब्रह्मचर्य में आया तो देवस्थिति में गया। मनुष्यों में देवता! क्योंकि पाशवता गई। पाशवता जाने पर देवता जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जब तक ब्रह्मचर्य नहीं आया, तब तक पाशवता है, छोटे प्रकार की। मनुष्यों में ही पाशवता है। विषय गया तो शीलवान कहलाएगा। इस जगत् में शीलवान जैसी उत्तम कोई चीज़ नहीं है। शीलवान तो, बहुत प्रभाव और उच्च चारित्र होता है उनका!

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.